

जैनधर्म प्रकाश.

तत्र च गृहस्थैः सद्ज्ञिः परिहर्तव्योऽकव्याणमित्रयोगः, सेवितव्यानि कव्याणमित्राणि, न द्वैष्ट्रनीयोचितस्थितिः, अपेक्षितव्यो द्वोक्तमार्गः, माननीया गुरुसंहतिः, चवितव्यमेतत्तंत्रैः, प्रवर्तितव्यं दानादौ, कर्तव्योदारपूजा जगतां, निष्ठपणीयः साधुविशेषः, श्रोतव्यं विधिना धर्मशास्त्रं, जावनीयं महायत्नेन, अनुष्टेपस्तदर्थो विधानेन, अववश्यमनीयं ऐर्यं, पांडवोचनीयायतिः, अववश्योक्तीयो मृत्युः, चवितव्यं परायोकप्रवार्त्तः, सेवितव्यो गुरुजनः, कर्तव्यं योगपृष्ठदर्शनं, स्थापनीयं तद्वादि मानसे, निष्ठपयितव्या धारणा, परिहर्तव्यो विकेपमार्गः, प्रयतितव्यं योगशुद्धा, कारयितव्यं जगतद्भुवनविम्बादिकं, द्वेषनीयं भुवनेशवचनं, कर्तव्यो मङ्गलवजपः, प्रतिपत्तव्यं चतुःशरणं, गहितव्यानि द्रुष्टवतानि, अनुपोदपितव्यं कुशब्दं, पूजनीया मंत्रदेवताः, श्रोतव्यानि सचेष्टितानि, जावनीयपौदार्यं, वर्णितव्यमुत्तमज्ञानेन, ततो चवित्यानि जगतां साधुधर्मानुष्ठानभाजनता ।।

उपमितिज्ञवप्रपञ्चा कथा.

पुस्तक २७ भु. आर्थिन. संवत् १५६७. शाके १८३३. अंक ७ भा.

ज्ञानसार सूत्र विवरण.

(??) निर्विप आष्टक.
(लेखक-सन्मित्र कर्पूरविजयशु.)

समगता अदित सम्भव ज्ञान अने कियानुं रेवन कव्यार्थी लेने अदी अंतीम वृत्ति जगी छे तेवा भुनि भाइत्माज शर्वं संसार लाधनथी न्यारा रही शके छे. ऐवा भुनिवर निर्विप गण्याय छे के के रागद्वय गोदाहिकिनो लेख लागवा हेतानथी. अथवा के रागदेखाहिक संसार लाधनथी न्यारा-निर्विप रहे छे अथवा निर्विप रहे ता पुरतो अथत्न करे छे. तेह अरा निर्विप भुनिवर गोक्ष पहना अधिकारी अने छे. तेथी प्रथं गागत निर्विपतानुं स्वदृभ शाश्रकार वर्जिते छे.

संसारे निवसन् स्वार्थ—राजः कर्जस्वेषमनि ॥

द्विष्टते निषिद्धो द्वोको, झानसिद्धो न द्विष्टते ॥ ? ॥

स्वार्थ—संसारमां वसता अने स्वार्थे भाविष्यामांज तत्पर ऐवा सर्वं डोम्प्राणी

કર्मीથી લેપાય છે, અથવા કાજળની કોઈડીમાં રહેતાં કોણું કોરો રહ્યી શકે ? ઇક્ઝ જ્ઞાન સિદ્ધ પુરુષજ નિર્ભીપ રહ્યી શકે છે. તત્ત્વજ્ઞાની અને વિવેકી મહાત્માજ માત્ર કોરા રહ્યી કર્મ અંગતથી મુક્તા થઈ શકે છે. એવા સત્પુરુષોને સંસારના કોઈ પણ પદ્ધતિમાં આસક્તિ હોતી નથી, અને અંતર આસક્તિ વિના રાગ દ્રેપાદિકના અભાવે કર્મ અંધ પણ થઇ શકતો નથી.

વિવેચન—કાજળની કોઈડી જેવા રાગ દ્રેપ મોહ મમતાદિક હોયાથી ભરેલા આશાર ગતિરૂપ સંસારમાં વસતા સહુ કોઈ જીવો પોતપોતાના કલ્પિત સ્વાર્થ સાધનમાં તત્પર છતાં ખરેણર પગલે પગલે (ક્ષણે ક્ષણે) દ્રોયભાવ કર્મપદ્ધતી લેપાય છે. દ્રોય કર્મ તે જ્ઞાનાવરણી પ્રમુખ આડ કર્મની વર્ગણાએ. અને ભાવ કર્મ તે દ્રોયકર્મના ક્રૂણ-રસરૂપ રાગદ્રેપાદિક પરિણામ સમજવા. જ્યાં સુધી જાની મહાત્માની કૃપાવડે ખરાં સ્વાર્થનું સ્વરૂપ યથાર્થ સમજવામાં આવે નહિ ત્યાં સુધી અજ્ઞાનવશ જીવ પોતાની મતિ કલ્પનાવઢે કલ્પી કાઢેલો જોઈએ. સ્વાર્થ સાધવામાંજ સહા સાવધાન હોય છે. તે અજ જીવ સુખભૂધિથી સ્વકલ્પિત સ્વાર્થ સાધવા જતાં મિથ્યા બ્રાન્નિ ચેંગે ઉલટો ફુણી થાય છે. એટલે મોહ મમતાદિક રાગ દ્રેપવાળા માટા પરિણામથી પોતાના રતન જેવા આત્માને મલીન કરે છે. એવી સ્થિતિ હુનિયાલરમાં સહુ કોઈ અજ્ઞાનવશ વતી જીવોની હોય છે. ઇક્ઝને જાની સિદ્ધ મહાત્મા લોય છે, તેજ તેવા દોષ પદ્ધતી દૂર રહ્યી શકે છે, તાત્પર્ય એ છે કે નિર્મણ જ્ઞાનના પ્રમાણ વગર જીવ માત્ર કર્મ મળથી મલીન થાય છે. એ કર્મમળથી જુટવું હોય એટલે રાગ દ્રેપાદિક હોયોનો લેપ લાગવા હોવો ન હોય તો નિર્મણ જ્ઞાનનો પરિચય કરવો જરૂરનો છે અને નિર્મણ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ જ્ઞાન સિદ્ધ (નિર્મણ જ્ઞાનવંત) મહાત્મા પાસેથી વિનય ણદુમાન પૂર્વિક કરવાની છે. તે વગર અનાહિ અજ્ઞાનજન્ય મલીનતા ટળી શકવાની નથી. જ્યારે એમ જ છે ત્યારે જ્ઞાન સિદ્ધ મહાત્માની લક્ષ્યાચૂં અહિત ગવેષણા કરવાની પ્રથમ જરૂર છે. જ્ઞાન-સિદ્ધ (નિર્મણ જ્ઞાનવંત-તત્ત્વજ્ઞાની) મહાત્મા ડેને કહેવા ? તે વાતનો શાસ્કડાર પોતેજ ખુલાસો કરે છે.

નાહં પુરુષવ્વજાવાનાં, કર્તા કારયિતા ચ ન ॥

નાતુર્મંતાપિ ચેત્યાત્મ—જ્ઞાનવાન વિન્યાતે કથમ્ ॥ ૪ ॥

સાવાર્થ—હું પરસાવને કરું નહિ, કરાયું નહિ, તેમજ ગાનુંચાદું નહિ, વિલાયમાં રમવાનો ભારે વર્જા નથી, ભારે સ્વલાયમાંજ રહેયું યુક્તા છે. આ પ્રમાણે અંતરમાં સમજનાર આત્મજ્ઞાની કર્મઅંગતથી કેમ લેપાય ? ને વિલાયથી વિરગીને કેવળ સ્વલાયરમણી થાય છે, તેજ ખરે આત્મજ્ઞાની છે અને તેવા આત્મજ્ઞાનીજ સક્લ કર્મકલ્પદ્ધી સર્વથા મુક્તા થઈ અંતે પરમપદને પ્રાપ્ત થાય છે.

વિવેચન—જેને પૂર્વના શુલ અલ્યાસથી સહેને આત્મજ્ઞાન પ્રગટયું હોય અથવા વર્ત-

मान लवभां कोऽधि तेवा आत्मज्ञानीना यथाविष्म पश्चियथी, तेमनी सेवा अक्षितथी आज्ञावश्वर्तीपशुथी केने निर्भिण क्षयोपशम योगे आत्मज्ञान प्रगटयुं होय ते आत्मज्ञानी छेक्षय छे. ते स्वपरने, ४३ चेतनने यथार्थे जूदा ओणाखी शके छे. तेथी स्वचेतन सिवाय पर मुहूर्गलिंग वस्तुआमां मुंजालो नथी. आत्मज्ञानीनी ओवी ४४ समज होय छे के हुं (आत्मा) पर मुहूर्गलिंग भावनो कठी भोडता नथी, परंतु पोताना ज्ञान दर्शन चारिनाहिं आत्मगुणोनेज निश्चयथी कठी लोडता हुं. परबाव (विषाव-राग देपाहिं होए) ने युष्टि आपनी ओ भारो धर्म नथी. परंतु ज्ञानाहिं निज स्वबावने जे युष्टि आपवा आपाववा दृप भारो धर्म छे. तेमज परबावनुं अनुभोदन करवानो भारो धर्म नथी परंतु शुद्ध निर्भिण ज्ञानाहिं आत्मबावनुं अनुभोदन करवा दृप भारो धर्म छे. आवी जेनी निश्चिण भति-शद्वा सहाय वर्ती होय ओवा गङ्गानुभाव ज्ञानसिद्ध मङ्गलता पुर्वोक्त कर्मलेपथी शा भाटे लेपाय ? नजे लेपाय. तेवा आत्मज्ञानी सभ विषम संचोग प्राप्त थतां भन्नुं केवी शीते समाधान करी ले छे ? केवी शीते चित्तनी स्थिरता साचवे छे, केवी शीते आत्मशक्तिमां निश्चिणपालुं साचवी राणे छे ? अने केवा आचार विचारथी अन्य ज्ञोने उत्तम दृष्टांत दृप थाय छे ? ते शास्त्रार संक्षेपथी समजने छे.

विष्पते पुद्गव्वस्कंधो, न विष्पते पुद्गव्वैरहम् ॥
चित्रव्योमांजनेनेव, ध्यायन्निति न विष्पते ॥ ३ ॥

आवार्थ—इक्षु पुद्गव्वलज्ज पुद्गव्वलथी लेपाय छे, पञ्चयेतन पुद्गव्वस्थी लेपातो नथी. जेम आकाश अंजनथी लेपातुंज नथी तेम आत्मा पण् कर्मचंजनथी लेपातो नथी. ओवा सम्यग् विचार पुर्वक विवेक सेवनारो सत्पुरुष क्षमापि क्षितिष्ठ कर्मनो भागी थतोज नथी. परंतु जे अनाहि अविद्या योगे भोडने वश थई जडवत् अनी पुद्गव्वलभांज आनंद मानी ओसो छ तेवो पुद्गव्वलानंदी तो भोड भायाना पाशमां पडी जडव क्षितिष्ठ कर्मचंजनो भागी थाय छे.

विवेचन—आत्मज्ञानीनी शुद्ध सभाव पुर्वक ओवी मानीनता होय छे के आकाश जेम रज्जी लेपातुं नथी (आकाशाने केम रज ओंटी शक्ती नथी) तेम स्वच्छ आत्मने पण् पर मुहूर्गव लेप लागतो नथी. पुद्गव्वल वडे तो पुद्गव्वव ज्ञेपाय छे. क्षितिष्ठ सुण हुःग तेमज सुण हुःगनां चाधन तो हेडाहिं पुद्गव्वलने लधने ज्ञेना संल वे छे. केवा शुद्ध आत्मामां पर मुहूर्गव संग कोऽधि शीते होनो घटतोज नथी. ओवी शीते निरंतर विवेक पुर्वक विचार करनार तेमज तेवा सभ विषम संचोगे लगारे हुं विपाह नहि उत्तां सभभावे रक्षेनार (गमे तेवा शुक अंचोगे हुं उन्माद अने विषम संचोगे जोह नहि वहेनार) निर्भिण ज्ञानी कर्मभावी शी शीते लेपाय ?

४८

४८। ५१। ०६६

तज्ज्वले पाय, सारे आवी निर्विष्ट वृत्तिनं धारणु करनार महात्मानो व्यवहारित किया
करवाशी गो लाल संसारे ? तेनुं शास्त्रार समाधान करे छे.

विस्ता ज्ञानसंपात—प्रतिपाताय केवज्जम् ॥

निर्वेपज्ञानमग्रस्य, किया सर्वोपयुज्यते ॥ ४ ॥

आधार्थ—निर्वेप इष्टि ऐवा सत्पुरुषनी सकल सापेक्ष हिया विसापमां जता
उपयोगने वारया माटे लेपछे, साध्यदृष्टिवाणीनी सकलहिया सापेक्ष-सहेतुकज्ज होय
छ, तथी आत्मानं ही पुरूप ने जे किया करे छे तेना हेतु पुरुगलमां जती इष्टिने
शेषपा अने स्वव्यापरमधी थवा माटेज होय छ, ज्यांसुधी संपूर्ण स्वभापरमधी
। थवाय त्यां सुधी तेवो संपूर्ण अधिकार पालवा अने बाधकभूत विसाय उपयो-
गने वारवा स्वानुकूल किया करवानी आस जडू पडे छे.

विवेचन—निर्वेप हशाने सतेज करे ऐवां तत्त्वज्ञानमां भग्न रहेनार महाशयनी
अठगज्यानहारित करणी तेने पैताना शुद्ध स्वदृपमां स्थृतना करवा उपगता विभान
उपयोगने वारवा तेमज तेवा मन वचन कायानो उचित निश्चिह्न करवा उपयोगी थाय
छ, अटबे आत्मज्ञानी-आंतर लक्षवाणा ज्ञानी ने क्षेत्र उचित करणी करे छे ते सर्व
ज्ञानपूर्वक पैताने कोई रीते लालाकारी नाणीनेज करे छे. तत्त्वज्ञानी कहापि अवहार
मर्यादानो खोप करता नथी परंतु व्यवहार मर्यादानुं पालनज करे छे. ते पञ्च उपर
अशुद्ध्या मुज्ज्ञ स्वहित समझनेज. विशेष ए छे के आत्मज्ञानी ने क्षेत्र उचित
करणी करे छे ते हाल अने अलिमान रहितज करे छे तेथी ते करणी क्षेत्र गच्छ तुक-
रान नहिं करतां तेने हितकरज थाय छे. वारे तेज करणी अन्य अज्ञानी छुवने
आंतर लक्ष शून्यपछे अथवा भिक्ष्या आउंथर इपे करवाशी हितक्षय थती नथी,
परंतु तुकरान पख करे छे. तेज वातनुं शास्त्रार समर्थन करे छे.

तपःशुतादिना मत्तः, क्रियावानपि विष्यते ॥

जावनाज्ञानसंपन्नो, निर्जियोऽपि न विष्यते ॥ ५ ॥

आधार्थ—तप आनेज्ञानविग्रेनो मह करनारेणमेतेवी आकरी कायकरणी करतो
पञ्च तो पञ्च कर्मथी लेपाय छे. अने निर्भास ज्ञावथी नेत्रुं अंतःकरणु लहे-
नुं लेप ते कहाय तेवी आकरी करणी शकतो न लेप तो पञ्च कर्मथी लेपातो
थी. ऐम समझने शाया गालुरोग्ये कर्तव्य अभिमान तजवुं युक्त छ. कोई पञ्च
गतनो मह करवाशी प्राणी पतीतपथुं पामे छ. अने मह तथु निर्भास थग नग्रपने
नेकर्तव्य सगलु ने सत किया करे छे, ते स्वउन्नतिने सुधे साधे छे.

विवेचन—कोई ऐक आत्मज्ञान शून्य-अध्यात्म लक्ष रहित भाणी तपज्ञ पठन पा-
ज्ञाहिकरणी गर्व-अलिमान सहित करतो उबटो कर्मथी लेपाय छे. केम्के ते करणी करनां

पशु तेना आशयनी मदीनता छे. तेमर ते करणी पेतानी अनाहि. मदीनता हरे करवाना लक्ष्यी पशु करवामां आंतर्ती नथी. अनाहि अज्ञानना वशागण्याची शुभ करणी. करवां छतां पशु मदीन वासनाना ज्ञेयी शुभ इगा आस करी शकातुं नथी. सती निवेदी पुरुषो तेज करणी शुभ आशययी अंतर्नी मदीन वासना मावने हरे करवा भाटे करां छेवाची शुभ इगा प्रास करी शके छे. तेजो तो अहंता अने ममताने भूक्षीने स्वर्कर्तव्य करे छे. अरबे के द्रश्य हेषाहिक पुहुळवर्गां ओटी अहंता के ममता धारता नथी पशु शुद्ध आत्मद्रव्य तेज हुं अने शुद्ध शानाहिक गुण अंज मारा अंवी साची हितकारी अहंता अने ममतानेज आर उप समज स्वचित करणी अंतर लक्ष पूर्वक करे छे. अरबे जेम चांतरंग आत्मगुण जगृत थाय अने अनाहि अहंता ममता विग्रे मदीन वाचनाचे. अहंतर नष्ट थाय तेवुं उत्तम लक्ष राखावानुं ते अहंता नथी. तेजीज तेमनी अकण करणी शुभानाची थाय छे. कडाच करवा येण्य करणी करी शकाय अंवी स्थितिनी अनुकूलाता तेमने जपाय नहि सारे पावु पेताना कर्तव्यनी लावना तो तेमना हृदयमां जेवी ने तेवीज अनी रहे छे. अरबे के ते करणी नहि करी शकवा छतां आशयनी विशुद्धिशी तेमने तेवुं शुभ इगा तो भोजे छे. अरबे के तेजो रागदेवाहिकी निराणा रही शके छे. गो कमु ओष्ठी वात नथी. शानी अरी करोटी अंमांज छे. अज्ञानी शुद्ध तो हरेक ग्रस्ती अहंता अने ममताशीज हुःगी थाए छे. शानी पुरुषी अज्ञानी शुद्धनी माणीनता निपरीतज संबंधे छे, तेथी तेने पगवे पगवे कर्मण्यधन थाय छे, रागदेवाहिकी लेपावुं पडे छे, अने दौखनी अहुवताची अंतराचकमां घटु घटु हःग अलेवुं पटे छे. ज्ञानी-विवेदीने निर्विप हशाशी कशुं हुःग रालेवुं पडेवुं नथी. इवितार्थ अंजे के भित्या अहंता अने ममताने दीप्ती अज्ञानी शुद्ध द्वाय तेवी करणी करी तोपागृ धर्मसाग्रथी लेपाई हुःगी थाय छे अने ज्ञानी-विवेदी नेज हःगना एज तेवी अहंता अने ममताने छेही निर्विप रही शुद्धी थाय छे. हवे आत्मा केम विमनेमन केम अक्षिम जपाय छे ? अने तेवी शुद्धि शी शी शी शावने छे ? तेवो शुद्धाचे शावनार करे छे,

अविसो निश्चयेनात्मा, विस्त्र व्यवहारतः ॥

शुद्धयस्यविपत्या झानी, कियावान् विपत्या दशा ॥ ६ ॥

आवार्थ—निश्चयतावद्धिष्ठिलेतां आत्मा अविस छे अने व्यवहारद्धिष्ठिलेतां तेज आत्मा कर्मची लिसा हेत्याय छे. तावद्धिष्ठिपुरुष अविस हशाशी आत्मानी शुद्धि करे छे, अने हियावान व्यवहारद्धिष्ठिपुरुष स्वानुदूस उचित आनारण्याची शुद्ध थाय छे. अनेवुं साध्य अंकर लेवाची स्व स्व आनुदूस सावनावरे उवाय भित्ति स पाहन करी शके छे. सांख्यविकल्प केव्य गावु प्राणी रवानुदूग सावना विना भित्ति सांगी शकता नथी.

विवेचन-निश्चय द्रष्टिथी जेतां आत्मा अलिस जग्याय छे. सत्तागत आत्मानुं स्वरूप सिद्ध परमात्माना जेवुं निर्भाज छे. परंतु व्यवहार नयथी तेनी वर्तमान स्थिति विचारतां आत्मा किस ऐट्ले रागदेखाहिक इर्म मणाथी लेपाखेलो हेयाय छे. निश्चय नयथी जेतां आत्मा स्फटिक रत्न जेवो निर्भाज जग्याय छे. अने व्यवहार नयथी जेतां स्फटिक रत्न उपर पुण्याहि गूँहाथी जेवी विकृति जग्याय तेनी विकृति—निष्कार वाणो जग्याय छे. मनवण के अनाहि इर्म संधीगाथी पुण्य पापना संचयवडे राग देख परिणाम येऊ आत्मानुं शुद्ध स्फटिक रत्न समान सत्तागत निर्भाज स्वरूप ठंडाई गथेलुं होताथी अग्र लुवने पोताना शुद्ध स्वरूपनुं सम्यग् ज्ञान वगर ऐका ऐक लान थर्द शक्तुं नयी. परंतु सतत अस्यास वडे अथवा डोई ज्ञान सिद्ध महात्माना सहजनुशेष वडे आत्मामां सख्य ज्ञान त्रीपक प्रगटातां पोताने पोताना शुद्ध स्वरूपनुं स्वतः लान थाय छे ऐट्ले तत्काल तेने तत्त्व श्रद्धा या तत्त्व प्रतीति प्रगटे छे. तेथी ज्ञानी पुढ़प स्वपरनी यथार्थ वहेचण् इरी पोताने इर्मगाथी मुक्त इरवा प्रयत्न सेवे छे. तेमां के अधिक ज्ञानइच्छा होय छे ते तीक्षण तत्त्वद्रष्टिवडे शुद्ध आत्मस्वरूपमां तन्मयता पामतो ईरट अमरीना न्याये इर्म उपाधिथी मुक्त थर्द शुद्ध-शुद्ध थर्द ज्ञय छे त्यारे के अधिक कियाइच्छा होय छे ते पछु सरयग ज्ञानानी सहायथी पोतानी अनाहि गतिन वासनांगो नष्ट थाय तेवुं पवित्र लक्ष राणी स्वशक्ति अने अधिकार अनुसारे उचित इरव्यानी निष्कामपणे करतो इतो इर्मउपाधिथी मुक्त थर्द अनुको शुद्ध शुद्ध थर्द शक्ते छे. सम्यग् ज्ञान इच्छा अने कियाइच्छा उल्लयने साध्य ऐज होय छे के पोतानुं आत्मस्वरूप शुद्ध स्फटिक जेवुं निर्भाज साक्षात् अनुसववुं तेनां साधन तरीके ज्ञानइच्छा ज्ञाननो अधिक आशेप राणे के त्यारे कियानो अधिक आशेप (अस्यास) राखे छे. समाधावथी स्वानुकूल साधनवडे उल्लय आत्मशुद्धि इरी शक्ते छे. समलालथी ऐट्ले ज्ञानने कियानो तिरस्कार होतो नयी अने कियावंतने ज्ञान प्रत्ये तिरस्कार होतो नयी. परंतु मत्येकने सहजुण् प्रत्ये अदृश्यिग प्रेम लाव गन्यो रहेते. तेथी ते उभयनुं स्वानुकूल साधनयोजे अवश्य कल्याण थाय छे. ऐट्ले के ज्ञानी अलिस द्रष्टिथी ऐट्ले निःसंगत्वाची स्वस्वरूप रमणता पारी शुद्ध थाय छे अने कियावंता भाग् किस द्रष्टिथी ऐट्ले आत्मानी सांशे लागेलां अनाहि इर्म आवरणां असेडवा भाए स्वशक्ति-अधिकार प्रमाणे अमुक अमुक इरव्यानी खास जडूर छे अम सहेतुक विचारी-निर्धारी ते प्रमाणे उचित इरव्यानी कामनारहित इरी अनाहि इर्मउपाधिथी मुक्त थर्द शुद्ध-शुद्ध थर्द शक्ते छे. अमां कुशो विशेष जग्यातो नयी. उपरना श्लोकमां ज्ञान अने कियानुं आसेवन इरतां अधिकार परत्वे ते हरेकनी साधन तरी-

के मुण्यता जशुवी ते उल्लयनो समावेश अटले जान किया उल्लयनुं समलाने सेवन क्षारे थध शके छे ते शास्त्रकार आगामा ३५०कमां जशुवी छे—

ज्ञानकीयासमानेशः, सहैवोन्मीत्वने द्वयोः ॥

जूमिकानेदत्तस्त्वत्र, जनेदेकैकमुख्यता ॥ ७ ॥

आवार्थ-निश्चय अने व्यवहारदृष्टिनुं साथेज प्रगत्यन-विकास थवाथी ज्ञान अने कियाए उल्लयनो समावेश थध थाय छे, परंतु इत्यात विद्येयथी तो ज्ञानती के कियानी मुण्यता होय छे, अवहार साधनयडे निश्चय सांय थाय छे, आंय निश्चय साधनथी भोक्ता सांय थाय छे, व्यवहार तो भोक्तनुं परंपर कारणु छ अने निश्चय अनंतर कारणु छे, उल्लयनुं भिलत थवाथी शीघ्र भोक्तसांयना सिद्ध थाय छे, भाई भोक्तार्थीये निश्चय दृष्टि हृदयमां धारीने अवहार भार्गनुं आपत्तंभन अपवश्य कर्वुं युक्ता छे, अभ कर्माथी शीघ्र सांयति दिक्कीशके छे.

विवेचन-निश्चय अने व्यवहार उल्लय नयनुं ज्ञानभोक्तापाले भरणी रीते थनां अनेदृष्टिनुं अझी आथे ज्ञानरणुं उन्मीत्वन [उद्घाटन] अटले उद्घातुं ज्ञारे थाय छे त्यारे ज्ञान अने किया उल्लयनो साथेज समावेश थाय छे, मतदाण ते सर्वज्ञहेशित उल्लयनयनुं सापेक्षपाणुं थवार्थी समजतां तेमनो परस्पर संग्रांध थवार्थी लक्ष्यमां आवतां लेमनुं समतोलपाणुं साई रीते समजत्य ते त्यारे अने दृष्टिनो अझी साथे अरणो निकास (उद्घाट) थवाथी ज्ञान अने किया उल्लयने सरणी रीते न्यूनाधिक रहित सेवी शक्तय छे, ते वगर भूमिकानेही तो अङ्क अङ्कनी—ज्ञानकियानी अनं मुण्यता संबन्धे छे, जेने ज्ञाननो केटवो श्वयोपशम थाय छे तेने ते प्रभावे ते दृष्टिनो तेटवो तेटवो, विकास थयेको होताथी स्वचाधिकार (थोऱ्यता) अनुसारे अनुकूल साधनमां इच्छि-प्रीतिपूर्वक प्रवृत्ति थध शके छे अने तेमां थथायेऽय लाल भणी शके छे, द्रष्टांत तरीके जेने यक्षु दर्शनावरणी कर्मनो केटवो श्वयोपशम थाय ते तेवां यक्षुवडे तेटलुं हेणी शके छे, जेने अने यक्षु भारां स्वच्छ होय छे ते अनेकी सरणी रीते साढ़ुं हेणी शके छे, जेने अभाणुं के शास्त्र अङ्कन यक्षु आढ़ुं होय ते ते वडेज साढ़ुं हेणी शके छे, अभ विनिय रीते उक्त द्रष्टांतने ज्ञान अने कियाना इप-थोऱ्यगमां भारी रीते धरानवुं अटले जेने केटवो निश्चय अने व्यवहारनयनो आंगन्ध सारो ओध थयो होय ते तेना प्रभाण्युगां नेटवीज ज्ञान अने किया ग्रत्ये इच्छि-प्रीति पूर्णक प्रवृत्ति करी लाल भेण्यां शके छे, जेने अङ्कन यक्षु भारी होय ते तेना वडेज सारो लाल लाली शके छे, पाण् तोयी धत्तर [णील] यक्षु ग्रत्ये के ते णील यक्षुथी लध शकाता लाल ग्रत्ये नेने निरस्तार होवो धरनो नथी, तेम स्वक्षयोपशम अनु-सार निश्चय दृष्टि जन अधिक ज्ञान इच्छि होवो धरे छे अने व्यवहार दृष्टि जन अधिक किया इच्छि होवो धरे छे, परंतु तेमाना केठने अङ्क णील तरक्क निरस्तार

युद्धि लावती तो तो अग्रानतानुं डे ज्ञानना विपरिणामतुं ज इण जयाय हे. सम भावी चाय दृष्टिं तने गाननुं विपरिणाम चं भवतुं ज नथी तेथी तेने एक शीज तरह निरस्कार युद्धि शामाटे थाय? नज थाय. तेने तो अद्युषु अं राद्युषु प्रत्ये अङ्गिरा प्रगज देवो घटे हे. राद्यावननामय आहर्षी, ने गोतानी चारीपे स्थापी राष्ट्री स्वरक्षय रगणुता करवा ज अयतन अर्यो करे हे, ते अंते अवश्य विजय पासे हे. अं निःशंहेह वात हे. सद्युषु के सद्युषु प्रत्ये देष के निरस्कार करवो ते गोतानी चागे अति चरभीपमां रहेला सद्यावननामय आहर्षीने वात मारी लांधी नाखवा वेवुं वातडी काम हे. अं वेवुं अति अनुचित वातडी काम करनार कहापि आत्म उत्तिं चारी शक्तो नथी. परंतु तेने स्वस्थान अष्ट थाई नीवे गणी पड वाने पगले पगले लय हे. अवा सद्युषुदेवी ज्ञवने स्वद्यपरमाणुतानुं शांत स्वाभाविक सुण स्वानमां पण वेवुं? क्षमायतापर्यी तेनुं हृदय तो उवटुं संतम रघ्या करे हे.

आटली वात अन्न प्रसंगोपात क्षेत्रवानी अंटला माटे प्रवृत्ति थाई हेके अत्यारे ज्ञवोगां प्रायः शुणुराग करतां द्रेषभाव अथवा उपेक्षा युद्धि अधिक ज्ञवामां आवे हे. ते आत्माने अत्यंत इनिकारक हे. कोई रीते तेवा अत्यंत अनिष्ट इण आपनार होणपाशथी प्राणींगो. अनें अंते होण्युद्धि तजु शुणुद्धिने ज भारतां शीजे. सहु कोई लब्ध ज्ञोने अवीं सद्युद्धि शीघ्र प्रास थायें! अने अनुकमे अनुपम सुण शांतिना पाणु तेमने अनुलव थायें! हेवे छेवटमां शाअकार चेते पाणु अङ्गिरा शुणुनुरागथी के सुमुकु ज्ञो श्री वीतराग वयनानुसारे शुद्ध निहोन वर्तन वडे स्वात्मद्वित चारी रघ्या हे तेवा शासनना अलंकारउप उदासित गदात्मायें. प्रत्ये प्रेम पूर्वक नगराकार करे हे अने आडकतरी रीते आपाणने पण तेवाज भद्रानुभाव मुनिजनोना पवित्र वरणुनुं शरणु थेवा इरमावे हे.

सज्जानं यदनुप्रानं, न द्विमं दोपपंकतः ॥

शुद्धवृद्धस्वज्ञावाय, तस्मै नगवते नपः ॥ ॥ ८ ॥

लावार्थ—ज्ञानयुक्त ज्ञेनुं अनुष्टान होणपंडीतीलेपायुं नथी गोपा शुद्ध स्ववाव रमणीय भद्रापूर्वपे नमस्कार थायें. ज्ञेना! किया समज पूर्वक भोक्ष गाठेज होवाथी निहोन हे तेमज तीक्ष्ण उपगोगथी सहज आत्मविशुद्धि करां समर्थ हे तेन नमस्कार हो.

विवेचन—जे गदानुभाव भद्रातमां रहेगो उत्तर हे, उत्तम उद्देशगी करवामां आवे हे, अर्थात् रागद्वेष रक्षित चर्वश वीतराग प्रभुना पवित्र वयनानुसारे करवामां आवे हे, तेमज स्वशक्ति अने अधिकार विचारी निकाम वृत्तिथी डेवण आत्मशुद्धि माटेज करवामां आवेछे तेथी ते कोईपणु प्रकारना होषथी हुवित थयेली

દેવી નાના કર્માંશુભી અનુભૂતિ બેન્ડ નાના જી ગવિચારી એટલે વિરોધ રહ્લિત છે તેવા શુદ્ધ આત્મા અને પ્રણાય આત્મા કે જે જગતું માત્રને ગુજરાત ચોઅય છે તેવા પૂજય પ્રવર મદાત્મા મદાનુભાવ મુનિનિથિએને આમારો નિકરણ શુદ્ધિશી-મન વચન અને કાયાની ઓકાથાથી નમસ્કાર હો.

પ્રસ્તુત આએક અંધીની વિવરણના વિપર્યાસાર કરતાં પ્રચારાપાત શ્રોદાંજલાંતનાના ઉદ્ગાર સહેજે નીકળે છે તે આત્માએં જોનો જીવી હોયો અની આગામી છે.

તત્ત્વજ્ઞાનના રહુસ્થથી ભરપૂર જ્ઞાનશાર સૂત્રના કંતા શ્રીમાન્યશોવિજયજ્ઞ મદ્ધારાજ સરખા મદ્ધા જ્ઞાની નિવેદી અને ચુણ અદ્ભુત મદાત્મા મદાનુભાવ મુનિ જોને કે ઉત્તમ શુણેના આશ્રયથી લાંકિલાર હૃદયે નમે છે તેવા ઉત્તમ શુણેનો કદ્યાચુકારી પરિચય વર્તાગાન કાળે વિવરાન અને હેવે પછી થનાર જાંદું સમુદ્દ્રાયે શા માટે ન રાખવો ? હિન પ્રતિહિન પોતાના આત્મામાં અદ્ભુતનુંનો વધારો થતો જથ્ય છે કે ઘરાડો થતો જથ્ય છે તે શામારે આદીશી જ્ઞાનાની દેવ ન રાખવી ? એક જ્ઞાનાન્ય વ્યાપારી પણ નાણુંચોળ નિંદેરિશી આવક જીવકની તપાય રણે છે તે મેહાયા જેવેરીની ગણુંનીમાં ગણુંતા મુનિએં પોતાના ચુણું હોપની તપકીલ (બારીક નપાસ) કેમ ન રાખે ? વર્તમાનકાળે આ વાતની અથ્યાંત ઉપેક્ષા કરતી જ્ઞાનામાં આવે છે તેથી અમારું તેમજ શાસનરચિક અનુભાવનું હૃદય અણી જથ્ય છે. પરથાં છિદ્ર જ્ઞાન જેવી કુદ્રતા તણ ગંગારા (ગોઠું મન) રાખી શા માટે સહદ્યુનુંનો અંથય કરી તેનો ઉત્તમ વાતરસો સ્વ શિષ્યનર્ગતે ન આપવો ? જરૂર આપવોન જેવું એ. તેમ કરવા નમ્ર વિતંતિ છે. ધ્યાનિશ્ચ.

ચંદ્રરાજાના રાસ ઉપરથી નીકલતો સાર.

(અનુષ્ઠાન પૃષ્ઠ પણ થા)

પ્રકરણ ર બ્રતું.

વૃદ્ધિ મામતા ચંદ્રકુમારને નેધાંન વીરસેન રાયત પોતાના જનમને કેળે યથો માનતો હુતો અને ગતમાં થાહુ રાય થતો રો. ચંદ્રકુમાર નવા નવા પ્રકારના જોવ જોવતો હુતો. એ વણતે રાય રાયુને તેણી થાહુ ચંદ્રાણ રાયની પણી દુરી, કારણું કે વીરમતિ કાળી નાગલું જેવી છે. એવા તેમના ધ્યાનમાં હતું. ચંદ્રાવતીના આવ-વાસીજ તે ધાર્યા ધરાવતી હતી તો પછી તેને પ્રારંભમાંજ પાટવીપુત્ર થાય ને પોતે પુત્ર વિનાની સિથતિ બોગવે એ તેનાથી અગાયજ કેમ. ચંદ્રકુમાર શુદ્ધ રાજધીજ હોવાથી અને સુંહર રૂપવંત હોવાથી તેમજ ભાવ્યાવસ્થાને અનુસરતું તોતડું

બ્રહ્મદુઃ્ખો હોલતો હોવાથી સર્વના મનનું રંજન કરતો હતો, માત્ર વીરમતિ જ તેમાં શરૂઆત રૂપે હતી.

ચંદ્રકુમાર વિદ્વાની શાળી નૈનધર્મનાં બાહુ કુશળ હતી, તેથી તેણીએ શાળને અનેક શુક્કિતથી શિકાર વિગેરમાં માદા પાપ સમજલીને તે કાગ છેડાની તીમાં રાજ તેના પ્રસંગથી કેનધર્મની વાસનાવાળો થયો. એટલે પછી તેણે અનેક કિનમાંહિરો ખાંધા વ્યા તેમજ શ્રાવક ણાંધુઓને સર્તોષ્યા અને સુનિરાજની શક્તિ કરવા માંડી. ‘સત્તસંગથી શું શું લાગ થતો નથી ?’

ચંદ્રકુમાર અનુષ્ઠાને આઠ વર્ષનો થવાથી તેને આભ્યાસ કરવા માટે પ્રવિષ્ય વિવાશુરૂ પાસે સુક્ષ્મોદ્યાં તે શ્રોત્ર વખતમાં જ સર્વ કાળાઓમાં પારગામી અફુસ્તાતિ કેવો થયો. ‘ઉત્તમ જીવોને વિવાશુરૂ માત્ર શાક્ષિકૃપ જ થાય છે.’

અન્યથા વસંત નાતુ આવી. વનરાજ સર્વ કુળી કુલી, કાગી જનોને કામોદી-ઘનના સાધનમાં વૃદ્ધિ થઈ. આંધાના મહેર ખાઈને કોયલ પણું ટહુકા કરવા લાગી. વનલતાએ વાયુના ડેલતી ડેલતી કામીજનોને આમંત્રણ કરતી હોય એમ જાપું-વા લાગ્યું. તેવે અવસરે આબાન્નપતિ પોતાની ણાંને રાણીએ તથા સર્વ પરિવાર સહૃદિત ઉત્તાનગાં ડિડાનિગિતે આવ્યા. ત્યાં સ્વેચ્છા પ્રમાણે સર્વ અનેક પ્રારની ડિડાએ કરવા લાગ્યા. રાજ પણું શુલાલ ઉડાડો, કેશરના છાંટણા છાંટવા, વૃશ્ચ સાંશે હિંદુંચાડા ખાંધાણી હિંચયકું ધર્ત્યાન્દ ડિડા કરવા લાગ્યો. ચંદ્રકુમાર પોતાની સરરી વથના રાજ્યુંનો સાંશે પોતાને અનુકૂળ એવી અનેક પ્રકારની રમતો પુણ્યાદ્ધિના દાદ વંદે રમવા લાગ્યો. પુલના દાદાએ ઉછળવા લાગ્યો. આ ણાંદું જેઠને વીરમતિ તેના હૃદયમાં દાબવા લાગી. તેના અંગમાં સર્વત્ર શોક વાગી ગગ્યો. તેથી તે નેત્રાશ્રન જિપે ધીમે ધીમે બણાર આવવા લાગ્યો.

તે વખતે વીરમતિની સણીએ તેને આમણું હુમણી જોઈને પૂછવા લાગી કે “આવે દ્વાંને વખતે તંગે પ્રસંગ ચિત્તવાળા કેમ જણ્ણાતા નથી ? કામહેત ચરણા તમારા પતિ ડિડા કરી રહ્યા છે અને ચંદ્રકુમાર પણું તગારી પારોજ રમે છે, છતાં તરો કેરા ચાગ શોકનિમજ્ઞ હેખાએ છે ? તમને શું કોઈએ હૃદયા છે ?” વીરમતિએ તેનો ઉત્તર કાંઈ પણું ન આપ્યો. તે તો ચંદ્રકુમારને રમતો જેઠને તેમજ ધીણું અનેક અભીનોને બુહી બુહી રીતે પોતપોતાના બાળકોને રમાડતી-ઝેલાવતી જેઠને મનગાં હેવને એણાંલા દેવા લાગી અને નિસાસા સુકળા લાગી. તે મનગાં વિચારવા લાગી કે “મેં પૂર્વબાયે શા પાપ કર્યો હુણો કે હું સુત વિનાની રહી ? જેમ મન વિનાનો પ્રેમ કામનો નથી તેમ હું સુત વિનાની કાંઈ પણું કામની નથી. વણી લુલ વિનાનો ઢેણ, હીપક વિનાનું ધર, સુગામ વિનાનું પુણ્ય, જાળ વિનાનાં

पाहणां, ज्ञान विनानी हया, ज्ञान विनानुं हान, भूर्जि विनानुं देवात्य, हांत विनानुं लोजन, कंड विनानुं गायन अने पाणी विनानुं अदैतर, तेमज चंड विनानी रत्नि शेषती नथी तेम युत विनानी कामिनी पाणू शेषती नथी. आ हेता, नगर, राज्य, भंडार, भेल अने औल सर्वं कहिं भारे शा कामनी छे? वणी युत विनाना वरे मुनि, प्राहुष्या तेमज पक्षीओं पशु आवता नथी. भाटे युत लोय तोज जन्मारे सझा छे, ते विना तहन निष्कृण छे.”

आ प्रभावे वीरमति पोताना मनमां अनेक प्रकारना आहुर होइर चिंत-
वती छती. तेवामां अकस्मात नलुकना आंगाना वृक्षपर ओळे सुडो आवीने थोडा.
तेने राणीने थहु किलिगिर थती ज्ञेधने हया आवी. तेथी ते भनुय वाणीजे बोड्यो
के—“ हे सुंहर फंतप किलवाणी राणी! तुं आम रंगमां जाग केम छरे छे? तुं
शा भाटे रुचे छे? तने शु दुःख छे? शी चिंता छे? ते कुहे.” आ प्रभावेनां
वयनो सांबणीने वीरमतिअ उंचुं जेचुं तो आम वृक्षपर ऐडेवा चुडाने झीडा.
तेथी आश्चर्य पामीने ते बोडी के—“ हे सुडा! तुं मने भारा दुःखी वात शु
पूछे छे? तुं तो वनना इगोनो वाक्षण्य करनारा अने आकाशमां भमनारो पक्षी युं
अथवा वनवासी तिर्यंच छुं. तिर्यंच याचे गविवेदी ज लोय छेनो तने भारा दुःख-
ी वात क्षेवाथी लाज शुं? जेतुं गाढ़ दुःख भांगी शके तेम लोय लारे तो भारा,
मननी वात तने क्षेवी योग्य छे. नदिंतर तो जाग जबु खोने गोताना दुःखी
वात करनार भूर्ज गण्याय छे.” वीरमतिना आवां वयन सांबणीने सुडो जरा
वरक्षीने बोड्यो के—“तुं गोटी सुलधु छे एम मनमां भानीने पुक्षाय छे शुं? तुं
हु एम भाने छे के एक पक्षी शुं करी शके? पाणू के काम भाण्यस न करी शके ते
एक पक्षी करी शके छे.” वीरमति कहे—“ एम न योल, भनुय करतां पक्षी वधा-
रे करी शके एवां तारां वयन भारा भानवामां आवतां नथी तेथी दुं केम क्षुत
कड़? ” त्यारे सुडो योड्यो के—“ तने पक्षीओनी कांध किमतां नथी. पाणू सांबणा,
श्रीकृष्ण जेवा पुरुषेत्तमनुं वाहन गडड छे ते एक पक्षीजछे. वणी ठेणी
सर्वत्र प्रशंसा थर्य रही छे एवी सरस्वति हेवीतुं वाहन दंस छे तेपशु पक्षीज छे.
एक पांगिना इडा समुद्र लध गये. इतो तेने भाटे अनेक पांगिनाने योगा करी
छेवट समुद्र पासेथी इडां पाणा लीपां ते डेतुं पराकृम १ पक्षीतुंज. एक शेठनी
अी पतिना विरहमां कामातुर थर्य इती, तेने अनेक वातो करीने अकार्य करतां देकी
राणी ते कौण्हे? सुडामेज. वणी नग ने हमयनिनो संणंध थयो तेमां पशु उगाकर
दंसनेज. अगे एक अक्षर वांचीते तो पशु शुवहया छेतीजे नदी अने तमे
भनुय अंगना अंथ वांचेपशु कांध डेकाणुं नदी. वणी गुहुस्य भनुयनी लेट्युं
आमाढ़ पशु गुण्डालुं गांचमुं शाऊकारे क्षेलुं छे. एटदे अभारी हुद कांध ओछी

नथी. आ प्रभावेनी णधी हक्कित उपरथी न्यायने अंगे मारे आपवणाणु करना पड़या छे; हुं कांधि हठ ताल्हीने जोटुं कहेतो नथी.”

आ प्रभावेनी चतुराधिवाणी शुक्रनी वातो सांबणीने नीरगति णाडु हर्षिता थष्ट. तेणु सुडाने कहुं के—“हुंतो गोटो प्रभाविक हेणाय छे, ताहो छे, वाणी तारी वाणी भां गीडाचा पण छे, हुं गने हवे तो प्राणु समान वद्धालो लागे छे. हुं अरे वर्खतेज आ वनमां आज्ञो छे, पण तने आटलुं णधुं लाण्डाव्यो डोखे ? ते कहे.” सुडो गोटो छे—“ एक निवाधरे गने गोतानी पासे प्राणनी केवा वद्धालथी राण्डो छोतो. ते गने रोनाना पांजरामां राखने होतो आने नवी नवी हक्कित कंडेतो होतो, तेमज नवुं नवुं शीखतो होतो—आ अधुं हुंत्यां शीखो छुं. एक हिवस ते विवाधर मने साथे लहने एक मुनिराजने वांहवा गयो होतो. लां मुनिवंहनथी मारा पाप नाश पाय्या. तेमनो उपदेश मने णाडु गीडो लाग्यो. मुनिए मने गांज रामां दीडो एट्ले विवाधरने तिर्यंग णंधनथी लागता दोयो संणधी उपदेश आप्यो. ते सांबणी विवाधरे तरतज मने छुटो कर्हो. आ प्रभावेनी ते मुनिराजनो मारापर घरम उपाकार थयो. लांथी वने वने गमतो हुं अहो आनी अडयो. आ वृक्ष सुंहर देखीने हुं तेना पर ऐडो. त्यां तने शोक निगम जेह तेथी गों शोकहुं कारण पूछ्युं आने मारी वगाग हक्कित कडी णतानी. हवे हुं तारी चिंतानुं कारण कहे, हुं जोटो दिलासो आगीश नहीं. माराथी णनयो तो हुं तारी चिंता मराईश.”

आ प्रभावेनी सुडानी हक्कित सांबणीने नीरगनिंगो जाण्यु के—“सुडो प्रविष्ट ज्ञानाय छे, माटे तेनी पासे हुः अणी वात कहेवामां अडगाण नाशी.” मारी तेणु सुन न होवा संणधी चिंता तेनी पासे प्रगट करी अने कहुं के—“ हे गोपायबाझ ! ए तुं केाध पणु भंग चंग के जडी छुटी ज्ञानो होय तो तेना आ वगत उपयोग कर. अरे वर्खते ज्ञे ते काम नहीं आवे तो पणी क्यारे आवयो ? वाणी हुं गोडुं कहेवाणी वधारे समाज शके देवो छुं; तेथी वधारे कहेवानी जड़र नथी. हुं गने प्राणुशी पणु वद्धालो छे. गों तने आज्ञी मारा नीर करीने मानयो छे. हुं गोटो सादसिक ज्ञानाय छे. मारी चिंता ज्ञे हुं मराउयो तो हुं तने मारा नववण्णो हार फेरवीश, तितम उत्तम लोकन खवरावीश अने प्राण्यो उपाकार मानीश. माटे हवे हुं तारे णोणे छुं. गों लोणे वावे मारी णधी वात तने कडी हीभी छे, तो केाध शीते मने पुन आरीने गालुअनी हारमां लाव.”

सुडाणो तेनी णधी हक्कित सांबणीने कहुं के—“ हे राणी ! तगे विअवाह न करो. हुंतो शुं करी शकुं पणु प्रभु तगारी आशा गूर्जु करयो. हुं तो तगने दिशा णतालनारो थक्की. तमने हुं आजशा धर्मनी माता मातुं छुं. तमारे माटे हुं बनयो.

પ્રયાસ કરીશ, માટે તમે ચિંતા તજુ ફુને શાંતિને ધારણુ કરો." વીરમહિને તેનાં વચ્ચેનોથી કાંઈક નિવૃત્તિ થઈ. પછી પાછું સુડાએ કહું કે—" હું એક ઉપાય કહું તે સંભળો—આ વનની ઉત્તર દિશાએ અધિકારેવ સ્વામીનું મંહિર છે. ત્યાં ચૈની પુનમની રાન્નિએ નાયકના સરંગમ સહિત ઘણી સુંહર ગાસરાએ ઉત્સવ કરવા માટે આવે છે. તેમાંને સુખ્ય આસરા છે તે લીલા વાઙ્મો પહેલે છે અને નીચરતનના આનુષ્ઠાનિક ધારણુ કરે છે. તે વચ્ચે જે હાથ આવે તો ધારેલું માર્ય તેનાણી ચિદ્ર શગે. તું પૂછીશ કે આ વાતની તને શ્રી ખાણર? તો સાંભળી ગઈ ચૈની પુનમે હું નિગમધરની સાથે એ મંહિરે ઉત્સવ જોવા આવ્યો હતો, તેથી આખી વાત જાણું કું. ગાડે આવની ચૈની પુનમની રાન્નિએ તમારે એકલાં તે મંહિર પાસે આવવાં અને મારી કહેવીનાન ધ્યાનમાં રાખવી, તેમાં ગફ્ફલત કરવી નહીં. "

આ પ્રમાણે કહી તે સુડો તરતજ આકાશમાં ડડી ગયો. વીરમહિને તેના નિર્દ્દિશી આંખમાં આંસુ આવ્યા, પછી આગો દ્વિવસ રાજ નિગેરે દ્રાગ ગેઝીને ચંદ્રાંશુ સમયે શહેરમાં આવ્યા, તેની સાથે વીરમહિ પણ ગોતાના મહેલમાં આવી.

અનુકૂળે ચૈની પુનમ આવી. વીરમહિને શુષ્ઠું વચ્ચન સાંગર્ય, દ્વિવસ વ્યતિકરણે. રાની પડી. વિરમહિને વેશ બહદર્યો અને નિશ્ચાસ્ત હાજીને ચોલાનો મહેલ રાગાવીને એકલી મહેલની તેમજ નગરની ગાદાર નીકળી. જુઓ. જીનાં ચરિત્ર ને તેના પરાકમ ! આ જગત્ભૂં સ્વાર્થ તૈનાને પરગ બહુલ છે. તેના માટે પ્રાણી અનેક પ્રકારનાં પ્રયત્નો કરે છે. પ્રાસી તો ઉદ્ઘાટાવ પ્રમાણે થાય છે પરંતુ દુના પ્રકારનાં આડી રાખતા નથી. વીરમહિ રાજની રાણી છતાં એકાઢી નિર્ભયપણે વિવાન તરફ આવી. સોણ કળાએ પૂર્વ ચંદ્રગા આકાશમાં જળકી રહ્યા હુતો અને ચારે પાણું ચાંદનીવડે વનરાજ શોભી રહી હુતી. તેમાં જિતાવળે આલતાં રોગે દૃશી જિતના મંહિર હીનું. મસ્તકગાર સુવર્ણની કાગશ આને પવનનડે ફરફરતી ધનન હીરી. વિરમહિ તે જોઈને ણાહુ હર્ષ પારી. જિતનગંહિર પાસે પહોંચી. તેના પગથીચા ચડી શ્રી અષલપ્રભુને લેખા. પછી અવિનયની ક્ષમા માગીને તે પ્રચલનપણે જાંતાઈ રહી.

એટલામાં આસરાએનો સમુહાય આવ્યો. તેણે આહીશર પ્રભુને નમસ્કાર કરીને પ્રથમ દ્રઘ્યપૂજા કેશર મંહનાહિક ઉત્તમ દ્રઘ્યોત્તમ કરી. ત્યાર પછી ક્ષાવપૂજાનો આરંભ કર્યો. અનેક પ્રકારના વાણુંતો સનજ કર્યો. તેના સ્વર સાથે સ્વર મેળાનીને ગીતાગાન કરવા માંડયું અને અનેક પ્રકારે નૃત્ય કરી પ્રાસ ઘણેવી કરાને સફળ કરી. પછી ન્યારે તે બાંધી શ્રગિત શહી ગઈ ત્યારે જિતનગંહિરની ગાદાર નીકળી, પોતપોતાના વસો ઉતારી, નજીકની પુષ્પકરણમાં સ્નાન કરવા માટે ઉતરી. તે અવસરે વીરમહિ ખરાળર અનગર જોઈને ગાદાર નીકળી અને પઢેલાં વાઙ્મોમાંથી

શુક્રા કલ્યાં પ્રમાણે મુખ્ય અપસરાના નીલ વસ્તો ઉપાયાં, પાછી જિનમંહિરમાં પેરી આને દ્વાર અંદરથી ણંધ કર્યો, ભગવંતનું શરશુ લઈ અંદર સંતાપ રહી આને પોતાના મનમાં ઇવે કાર્ય સિદ્ધ થયું એમ માનવા લાગી, ‘પ્રયત્ન પુરૂષીન છે, લાભ લાગ્યાએન છે.’

અપસરાઓ વાબડીઓં આનેક પ્રકારની કુદા કરવા સાથે સનાન કરી રહી એવાં બાખી ણાદાર નીકળી. આને પોતપોતાના વસ્તો એળાણીને પહેલી લીધાં, મુખ્યા પોતાના નીલ વસ્તો શૈવચા લાગી, પણ તે છાથ ન લાગવાથી તેણું પોતાની સખીઓને કહું કે “કોઈએ હુંસી કરીને મારા નીલવચ્ચ લીધાં હોય તો તે આપો.” એજ સ્વેચ્છાં અપસરાઓ સોગન આપ્યને બોલી કે—“એમે કોઈએ આપનું વચ્ચ લીધું નથી. વાણી અમારાથી તમારી હુંસી કરાયજ કેમ ? તમે અમારા સ્વાગતીની છો તો તમારી સાથે એવું હાસુ એમ કેમ કરીએ ? માટે તમે અમારા ઉપર ણીલકુલ શાંકા રાખશો નહીં પણ અમને એક શાંકા પડે છે કે—આપણે સનાન કરવા ગયા ત્યારે જિનમંહિરના દ્વાર ઉધાડાં હુતાં આને હમણાં ણંધ છે તેથી આપના વચ્ચ લઈને કોઈ આંદર પેહું હશે.”

આ વાત સોના ધ્યાનમાં ઉત્તરી એટલે તે બાખી દેરાસરના દ્વાર પાસે આવી આને મુખ્યા બોલી કે—“દ્વાર ઉધાડો, અંદર કોણું છે ? કે હોય તે ણહાર આવો. રાત શોડી રહી છે ને અમારે બાહુ હૂર જ્વાનું છે. વાણી અમારાં હેવતાનાં વસ્તો મનુષ્યને કામ આવે તેમ નથી. તમે અમારું નાટક જેયું જ્વાય છે તો નાટક જેઠને જાણું તમે અમને વખતું હાન આપ્યું એમ માનશું પણ હવે વાર ન લગાડો. કહી તમારે કંઈ કાર્ય કરાવવાનું હોય તો કહો, કે હો તે કરી આપશું. અંદર કી હો કે પુરૂષ હો, કે હો તેને અમારું વચ્ચન આપ્યો છું એ માટે હવે જોપી ન કરો.” આવાં મુખ્ય અપસરાનાં વચ્ચનો સાંભળીને તરતજ વીરમતિ દ્વાર ઉધાડી ણાદાર નીકળી. તેને જેઠને તે એક કી હોનાથી અપસરાઓ આશર્ય પાગી, વીરમતિ બોલી કે “તમારાં વચ્ચ હું પછી પાછા આપું, પથગ મારું કાર્ય સિદ્ધ કરી આપો.” મુખ્યા બોલી કે—“વચ્ચ લાલો પછી આપજે, તારું કાર્ય શું છે તે કહો.” વીરમતિ બોલી કે—“મારી શોક્યને ચંદ્રકુમાર નામે પુત્ર છે, મારે પુત્ર નથી. માટે મને પુત્ર આપો. હું શુક્રા વચ્ચને આહી આવી હતી આને આપાના વચ્ચ ગે લીધાં છે. મારો અપરાધ થયો હોય તો ક્ષમા કરો. મારા હુદયમાં કે વાત હતી તે ગે આપણી પાસે પ્રકાશિત કરી હીધી છે.”

વીરમતિની આવી માગણી સાંભળીને મુખ્યા અવધિજાનવટે જેઠને બોલી કે—“હુ વીરમતિ ! તારા બાળ્યગાં પુત્ર નથી તેથી તને પુત્ર તો નહીં થાય, પણ

હું તને આકાશગામિની, શત્રુજાહુરણી, વિવિધકાર્યકરણી, જળતરણી વિગેર વિદ્યાઓ આપું, તે હું સિદ્ધ કરને તેથી રાજ્ય પણ તારું થશે, મન લારી થશે અને ચંદ્રકુમાર પુત્ર પણ તારે આધીન થઈને રહેશે. હું એમ માનીશ જ નહીં કે આ પુત્ર ખીલુંનો છે—તારો જ છે એમ ગાનને. પણ એક લાલ ધ્યાનમાં રાખને કે હું એ પુત્રને ડિચિતું પણ હુઃખ ન આપીશ. તારો પુત્ર હોય એમ પાળને, તો તેથી તને કાયમ સુખ પ્રાપ્ત થશે; પરંતુ જે તેને હુઃખ આપીશ તો પરિચામ સારું નહીં આવે.” વીરમતિએ આ પ્રમાણેનાં વચ્ચેનો સાંકાળીને તે અંગિડાર કર્યો અને તેણે આપી તે વિદ્યાઓ થહુણું કરી. પછી વસો પાછાં આખ્યાં એવાં આપું આપું પણ પોતાનાં વસો પહેલી પોતાને રહાનકે ગઈ. વીરમતિ જુપણપ્રભુને નગરકાર કરી વિદ્યાઓ થહુણું કરીને ઘરે આવી. આ લાતારી રાજને કે કોઇને ઘાર નહીં.

પછી વીરમતિએ તે સર્વ વિદ્યાઓ કરે કરે સામ્બવા માંડી. સર્વ વિદ્યાઓ સિદ્ધ થઈ એવાં તેના મનમાંથી હુઃખ માત્ર નાશ પાર્યું અને તે આતંહથી રહેવા લાગી.

અહીં ખીલું અકરણ સમાપ્ત થાય છે. દિને આ નિવાનો તે કેનો ડિપ્યોગ કરે છે તે આપણે આપગલા પ્રકરણોગાં જોવાતું છે. હાલ તો આ પ્રકરણું આર્થિ સાર શું બ્રહ્મણ કરવાનો છે તે હુંકારાં અવદોષાન કરીએ. કારણું કે જે કોઈ ગણું કર્યાનો સાર થહુણું કરવાનાં ન આવે તો ને કઢી ચાંગળી વૃથા છે. કેટલીં કથાઓ શાશ્વતમાં હાણલ કરેલી છે તે એવી સાર થહુણું કરવા માટે જ છે.

ખીલ પ્રકરણનો સાર.

જ્યાં એ શ્રીઓ અથવા તેથી વધારે શ્રીઓ દોય છે ત્યાં પુત્રરતનની પ્રાપ્તિ થયે પણ નિશ્ચિત થઈને જોગી રહેવાતું નથી. એક ચિંતા ધરે છે પણ ખીલ વિષે છે. જોવા પ્રસંગમાં તે પુત્રને કેવો લાગનો પડે છે તેની અગર તેના અનુભવીઓને જ પડે છે, શોકયના પુત્રને આપર માતા શું શું ન કરે તે કઢી શકાતું નથી. તેને માટે અનેક પ્રકારના કામણું દુમળ્યો થાય છે. તે પુત્ર જ્ઞાનિશ્વર થાય, ગંડો થઈ જાય અથવા શરીરે જોડ ખાંપણુંનો થાય તેને માટે બની શકે તેટલાં પ્રયત્નો થાય છે. રાજકુળમાં બહુ થાય છે તો ગૃહસ્થોગાં બ્રેન્ધા થાય છે; પણ થાય છે તો ખરાં. આવાં કારણથી જ ચંદ્રકુમારને જ્યાનવાના માટે તેની માતાને અને રાજને બહુ સંભાળ રાખવી પડતી હતી. અહીં પુત્ર નિતાની આપર માતાઓએ ખાસ ધ્યાનમાં રાખવાતું છે કે—જે પોતાને પુત્રસુખ જોગવાની અભિલાષા દોય તો તે

શોકયના પુત્રની ઈંડી કરવાથી પૂર્વી થવાની નથી. પણ તે તેનાપર પ્રસંગ રહેશો; તેનું પોતાના પુત્રનું અતિપાલન કરશો તો તે બાળકની નિરોધ ભનની આશિષ તમને પણ પુત્ર પ્રાપ્ત કરાવશે. તે શિવાયનાં કેટલાં અપદૂર્યો કરશો તે તો આ ભવમાં પુત્ર પ્રાપ્તિ નદી થવા હેય પણ આગામી વારે પણ તરને વિદ્યાપણ જ પ્રાપ્ત કરાવશે. આ વાત અરાણર યાહ રાણજે. પંડિત શ્રી વીરવિજયજી હિત શિક્ષા છન્હી શીમાં એદે છે કે—

શોકય તણું લઘુ ખાળક હેખી, ન ધરો એહ ડિયાગેલુ;

એહ તણું શિતળ આશિષે, પુત્ર તણું સુખ પામે.

આંલાળ સજનીલુરે.

ચંદ્રાવતી કેન ધર્મમાં પ્રવિષુ અને દદ હૃતી તો તેણે પોતાના પતિને પણ જોનધર્મ પમાડ્યો, ફુર્યસન છોડાયા અને શાસનની ઉભાતિના અનેક કાર્યો તેણી પાસે કરાયાં. આ ગધાં ઉત્તમ કુળની લાણેલી ગણેલી સદગુરૂની કન્યા ગોળવવાનાં ક્રાંતે. ગારે અર્માણના મેળવવાનો પ્રસંગ આખા ભવની સંસારી સ્થિતિમાં મુખ્ય લાગ અળવનાર સમય તેમાં પૂર્તી સાવધાની રાખવાની જરૂર છે. એકલા રૂપાદિક પર ગોદ પાગી ગોદઘૃદિનું સાધન મેળવી લાવવુદ્ધિ કરાવનાર સહાયકજ ગોળવવાનાં જાણશે તો તેથી આ ભવ ને પરલાવ લાગડ્યો. આ વાત અરાણર ધ્યાનમાં રાખવાની છે, જેને ધર્મસુરૂપ પત્ની પ્રાપ્ત થઈ હોય તે પુરૂષને જ ખરો લાગ્યશાળી ગણું હોય છે. શોટા ધરની સુંદર કી મળે તે કંઈ લાગ્યની નિશાની નથી.

ચંદ્રકુમારને નિશાળે સુક્ષ્મા અને તે શ્રોત વણતમાં જ સર્વ કણાગાં પાર આગામી થશે. એમાં કંઈ આશર્ય નથી. કારણ કે આ વાતનું શરીર તેનું આહ કર્મના વયનું છે અને આ વિવાશુરૂ પારો વેને ખાદુ શેંદ્રો વળત લાગ્યેને; પરંતુ નેત્નો રૂપાત્મા કંઈ આહ વર્પનો નથી. તે તો પણ કાળજી અભ્યાસ કરતો આહ્યો છે, તેથી ગૂંઠ કરેલો કૃથોપશમ અહીં પણ તેને કરું લાગે છે. વાતના પરાતારનાંની જે આપરણ આપેલું હોય છે તેના નિવારણ મારે જ માન વિવાશુરૂન્ના જરૂર પડે છે. ઉત્તમ છુંબો વાતા કાળાગાં ઘણું જ્ઞાન મેળની શકે છે, તેનું કારણ પૂર્વનો કૃથોપશમ જ સાગજવાનો છે.

રચંતકતુ કામીજનોને વેલા અનાવનારી છે, તેમાં પણ તેના પૂર્વી ચાધનવાળા હ્યાનગાં સ્વીલાદિક સાથે જરૂર તે વિશેણ આગેદીપન કરનાર છે. બોગી મનુંગે આદાનાં લાગ્યનો શેંદ્રોયા જ કરે છે અને મેળાયા કરે છે. લાલચીર પ્રાણીઓ જોતા પ્રસંગયાં પણ વિરક્ત લાવળી જ તુદ્ધિ કરે છે. તે આવા કાગાસકત છુંબને જેધને હૃદગચ્છાં એહ પામે છે, તેને એ ભધા બોગ સંશોધની અનિલાના પ્રલક્ષણે

नाश्रागता यस दिन ॥ नाडगतो सार.

१३७

६४मान थाय छे, तेथी एंगो ज्ञेवा क्षाणुनिनाशी सुखमां आसक्त न थां अवि-
नाशी सुणनी ज मध्या करे छे.

एक वस्तु अमुक गनुपेने अपीतिना क्षाणुभूत थाय छे, तेज वस्तु गनुपेने
अपीतिना क्षाणुभूत थाय छे. वस्तु गनुपेन छां व्यक्ति गेहे आवो लेह यह दै
तेथी एम सिद्ध थाय छे के कोई पशु वस्तु भीति के अपीतिना प्रणाम क्षाणुभूत
नथी पशु मनज तेना क्षाणुभूत छे. गुणो। चांद्रुमार जेवो नो कोभनि आनंद
उत्पत्त करे तेवो मनोहर अने भाष्यशास्त्री पुन तेने खाणुक्तिक रतो ज्ञेधने पशु
वीरमतिने ईर्षी आवी, जेह थयो, आंसु आब्या, श्रोकनिमधं थध गध. त्यारे
हवे वस्तुनो शो होष ? योतानी मानसिक विचारणा अनुसारज कोई पशु वस्तु
सुख के हुःण आपनारी थाय छे. वाणी वसांतऋतु पशु ज्यारे सर्वने आनंद
आपनार थतो होतो त्यारे ने वीरमतिना मन किपर आनंदनी अद्य पशु असरे
करी शक्तो नडोतो. अनेक ज्ञीणो योतानामा पुनरे अनेक प्रकारे गोक्षानवा
इती ते पशु जागे वीरमतिने ऐह विपलाना माटेज करती न लेय तेम तेने ला-
गतुं हतुं. आ घाँटु तेना छुहयमां रगी रेहेवी धर्मिनुं परिष्वाम न दतुं. अनुसारज
कोई पशु मनुष्यने सुणी ज्ञेधने के आनंद करतुं ज्ञेधने युशीज थाय छे. हुःणो
हुःणी थाय छे अने धूःणिणुओ तेने तेना सुणथा रडीत जेवाते धन्देहे हूं. अनुसारज
तो तेना ते सुणनो नाश करवा प्रयत्न करे छे.

पुनरी तीव्र लालसावाणी वीरमति लाभगात्र पुनमाज हेजे छे असु तेक
पुन विनामी योतानी छांहगी निःसार माने छे. येवा वण्ठतमां लाङ्गोचात् तेवा
सुडो त्यां आवी अहे दे अने ते तेना हुःणनुं आरयु युँ छे. वीरमति लालसा
हश द्वेवाशी तेने योताना हुःणामी वात योक्षेष्व कुहेनी नथी. नीतिशास्त्रमां इन्द्रु
छे के—“ऐहे हुःण अनुभाव्युं होय, के आपणुं हुःण आंसावीने हुःणी याय लेह
होय अने के हुःण टाणाना यमर्थ दोय तेने योतानुं हुःण कोहेवुं ते शिवाय नहीं
जाने न कहेवुं. आरयु के जेवो हुःण अनुभाव्युं नथी ते आपणु हुःणानी किउन
आंडी शक्तो नथी, के आपणु हुःणे हुःणीव्या थवा केटवी लागाणी पशु न पस-
वतो होय तेने हुःणानी वात कहेवी ते वांसनी नणीमां कुँक मारवा लारार थाय
छे अने के हुःण टाणाने समर्थ न कोय तेने हुःण कहुं के न कहुं ते सरण्याज
छे.” आरी तो सुयो कहे के—हुं ताढ़ु ताढ़ु हुःण टाणी यक्षा यमर्थ इः. ते पक्षी,
ता पराक्रमना केटवाक दृष्टांत तेनी यासे कही जानो छे. पक्ष ने पञ्च योतानी लाल
नुं केटलुं अशिमान होय दे ते जेवानुं हूं. आदला उपरवी विवाहितान लाल
जेवुं मे एम न समझुं. यरंतु ने अविमान उन्नागांवी हूं राखावे, ते

૪૪

પાછા ઓસરાવે અને પરમાર્થને મારે ગાળું આપવા પણ પેરલા કરે તો ન વાતાં, કુળના અને ધર્મના અધિગાનને ધારણું કરવા જેવું છે એવા ધ્યાનગામં રાખતું.

આ પક્ષી ખણું પોતાની પાંચમા શુદ્ધાણાની ચોંચતા સમજુ તેને મારે પોરસાય છે ત્યારે મનુષ્યે તો પોતાની ચોદગા શુદ્ધાણા સુધીની ચોંચતા સમજુ કેટલું પોરસાવા ચોંચ છે ? ગણું માન એમ પોરસાવાથી લાગ નથી; તો એ પ્રામા કરવાનો પ્રયાસ કરવાની જરૂર છે. વગર મહેનતે કંઈ શુદ્ધાણાનું પ્રામા થઈ શકે તેમ નથી.

સુધાની હક્કિત સાંસારાવાથી વીરમતિનો તેના પર વિભાસ એવો છે કોઈથે તે તેને પોતાના શુદ્ધાની વાત કરે છે. તે સાથે તેને ગોતી મોતી આશાએં આપે છે. સુડે તેની ચિંતા દ્વારા થવાનો ઉપાય સૂચયે છે અને પછી નિઃસ્પૃહ વૃત્તિ બતાવી આકાશમાં ડડી જાય છે. આવા નિઃસ્વાર્થ ઉપકારી પણ પક્ષીએ પણ હોય છે તો પછી મનુષ્ય કેમ ન હોય ? એવી ઉચ્ચ પંક્તિમાં નામ નોંધાવવાની કોને મુજબા ન થાય ? પણ નિઃસ્વાર્થ ઉપકારીનું લીરટ કરવામાં આવે તો તેમાં નાગોની સંખ્યા બહુ અદ્ય આવી શકે છે. તેનું કારણ શું ? તે સુઝેણે સ્વયમેન વિશારદું. અને પોતાનું નામ તેમાં દાખલ થઈ શકે તેમ છે કે નહીં તેનો વિચાર પોતાના અંતઃ-કરણું સાથે કરી લેવો.

આ હક્કિતમાં સુડે મનુષ્ય શાપાએ હોવ્યો તે વાતને અશક્ય કે આસત્ય ન માનવી અથવા રૂપક ન માનવું. પૂર્વના ક્ષેપણશમને લઈને પક્ષીએ મનુષ્યની જાણ ગોતી શકે છે. જે કે એવું બંધુ કૃવચિત બાંસ છે; પરંતુ નથી બાંસતું એમ નથી. ગરૂડ પક્ષી તો મનુષ્યની જેવી જાપાનું હોલનાર જ કહેવાય છે.

સુડાની કહેલી વાત વીરમતિએ પોતાના હૃદયમાં ડારી રાખી. અનુહૃતે તૈની પુનર આવી અને તે રાતે વીરમતિ વેશ લઈલી ડોઈ ન આપણે તેવી રીતે મહેનતી બદાર નીકળી. તે એકલી રણવગડામાં અથવા વૃક્ષશી લરખર વનમાં ચાલી. કી લે કે અણાં કહેવાય છે પણ તેમાં કેટલીક સ્વીએં. એવી બાળવાન હોય છે કે તે સાણાસાના ઉપનામને ચોંચ છે. વળી ક્ષીના અરિન પણ આહારાં ન આવે તેવાં અકળ હોય છે. નીતિશાસકાર કહે છે કે—

સ્ત્રી અરિન એકલાય, એહી એલાય જેણે;
દિલ્હાડે બીજે હારીથી, દયણી વિધાર દ્રષ્ટ મોણે;
ઉંદર હણ્ણી ઉહેણે, વઠ જઈ વાધ વિદારે;
સાયાએ ચણાં લહથે, ચણે દુંગર સરદે;
સુકી નદીમાં ઝૂઢી મરે, આપ અદ્યે સાયર તરે;
ક્ષીન ગંગા કહે રે હાકરો, સ્ત્રી અરિન એતા કરે.

वीरमति ज्ञानां चर्चा विविधा वार ॥ ८॥। ते द्विभित्वेव चाली. जितमहिरे पद्मांशा अने प्रवक्षत सङ्केता योग्य स्थान शोधी संताप्त रही. अप्सराओं आली. प्रभुनी द्रव्यमूल करी अने नृत्य कर्त्ता. तेमज गान तान वडे वावमूल पञ्च करी. पछी श्रगित थवाशी स्नान करवा गध, वस्त्रो उतारीने वावडीनांडा क्रपर मुक्त्या, ऐटदे वीरगतिने लाग गमयो. तेंमुळे लीलावर्गो विवाही लीधां ने याणी हेरामरमां बारच्छा गांध करीने संताप्ती. अप्सराओं स्नान करीने नीकणी. मुख्य अप्सराओं गोताना वक्त न दीडा. हेराना द्वार गांध हेण्याशी शंका पडी अने काम करी आपवानी आशा आपवाशी वीरमति गडार नीकणी. आई तेनुं पद्मविकाशुं लुम्बो ! इनु पञ्च ते कडे छे के-“माडूं कार्य सिद्ध करो याणी वक्त आपु ?” अप्सरा अवसर ओणणीने कडे छे के-“ गवे आपु तेम कर. कडे तारे काम शुं हो ? ” वीरमति पुन आपवा कडे छे. अप्सरा गतिविहान वडे नेनुं वर्षात्त लघेउ, तेथी तेने कडे छे, के तारे गुत्र तो थाय तेम नवी. गांध तेने डेवडीक विवाहो. आणीचे लेधी झी. तारे आधीन थथो.

अप्सराओं कडेल वाक्योमां छेलुं वाक्य ध्यान आपवा लायक छे. ते ए छे के तुं तारी शोक्यना मुवने डिवित् पञ्च हुःण न आपीश, तेने तारा मुत्रवत् पाणजे. ज्ञ तेम नहीं करे तो तने सुणाणी अनिविष्टम भासि रहेशे नहिं. वीरमति गरजनी वर्णते तो ज्ञ एधी वातानी हा लागे छे परंतु पाछण्याती ते वर्चन केलुं पाणे छे ते आपणे जेशुं. ते आशे न आण्यानुं परिशुभ केलुं आवे छे ते पञ्च जेशुं. गरजने वर्णने महुण्यो ज्ञ वर्तालुक वर्वावे छे तेवी ज्ञ भायम राखता होय तो ते कही “पञ्च हुःणी न थाय, परंतु तेना चिंतानी वृत्तिज ये प्रकारनी हेयछे. ज्ञेक कडे कडेले के-

परी गरज मन योऽहै, सरी गरज मन औँर;
उद्दराज मन मनुष्य को, ज्ञेक चित दा हार.

हे अप्सराओं स्वस्थाने थाय छे अने वीरमति पञ्च स्वस्थाने आवे छे. पछी ते अप्सराओं आणेवी निवाहो. साधी छे, निवा भिद्ध थाय छे. हे तेनो हृष. थेग ते केवो. करे छे ते ज्ञवानुं छे. भगवनने हुर्गेन्तुं पटंतर लांज पटे छे. अडना हायमां आवेत शज स्वपरनां रक्षण माटे थायछे, ल्यारे भीजना हायमां आवेत शज स्वपरना विनाश माटे थाय छे. अडना हायमां आवेत द्रव्य परोपकार तेमज पुऱ्य. गांध माटे थाय छे. त्यारे भीजना हायमां आवेत द्रव्य परपीडा ने पापवंध माटे थाय छे. अडने प्राप्त थेवेत अपिकार अनेक मनुष्योना डितने माटे, रक्षण माटे, गोपन्य गाटे अने हुःणना निवारण माटे थाय छे. त्यारे भीजने प्राप्त थेवेत अपिकार गहने माटे, अनेक गनुष्योने हुःण हेवा माटे तेमज अनेक भाषुसोना

भक्षण भाटे (हुरान करवा भाटे) थाएँ, आ अचार्य दिवानी पाठि था तब उन्होंने थई होय तो ते पारावार उपकारी भाटे थाएँ त्याएँ हुर्जने शेवटी विचारी आसि पारावार आपकारने गाटे थाय छे. केंगडे ते तेना महारी उद्धत घनी जाय छे अने सबल्जनो ओवा अमूर्त प्रामिणी उलटा विशेष नम्र घने छे. आ बाई फुकित आगाहा करवान यदानी होवाशी आही विशेष प्रस्तावना करवानी जडू नाथी.

आही आ रायतुं ठीन्युं प्रकरण समाप्त थाय छे. हवे आगाहा वीजा प्रकरणां शुं हुकित आषे छे अने तेगां रुद्ध्य शुं चागावेलुं छे ते लाभवानी भवाने प्रेतका करीने विरभीती भीते.

मंत्र शास्त्र.*

(लिंगी जाहुगर पु. २ लु. आ. १ लो.)

निवेदी वाचनार ! हातनो जगानो युद्धिनो छे अने तेवी करीने कोळ ५४ वस्तु अथवा कुयानो युद्धिग्रन्थ युवासो मणे नाह त्यां सुधी ते वस्तु अथवा कुया रवीकारवाने अरूपी गतावे ते स्नानाचिक छे. पाच तेवी आगाहा वधीने धर्गना केटलाक सिद्धांतोने हातना पाश्चिमात्य डेणतल्यां उठरेला तरुण्या वेळे अथवा असी गवेला गगानी कडपना रूप गवुता मांड्या छे; तेवा चमयगां पाश्चिमात्य साचन्सज धर्गना सिद्धांतने अनुगोदन आषे अने तेवी चलता स्थापन करे तो खर्मी हुव्यांगां आनंद किल्या निना रहेज नाहि. तेवी शेष द्यावगां स्वर संगांगी तुरोपगां शेवटी छे अने ते शेष गंतशाळनी सत्यता सिद्ध करवाने चाणप आरम्भु रूप छे.

भाटे आंजे आपेक्षु गंतनो विचार करीशुं, गंतगां शी सत्ता रहेवी के ? गंत उवा प्रकारे ठीजने असर करे के ? विगेरे आपेक्षु तपाचीशु, गयग गंत ते शुं के ? अगुक नियम प्रमाणे गोठेव अने अगुक रीने बद्धराता स्वरैनी गोक निश्चिन शेजना ते गंतनी व्याघ्या छे. ते स्वरै मुझरी (स्वनह) बिताश करे के अथवा मुझरी रूप के. गंतेच्यारनी अगुक प्रकारनी मुझरीओ नियमित अने भवेगर होय तो भीगे भीगे आपेक्षु केशो (नुदा नुदा शरीरेगांगी आवती मुझरीओ) पर दियंतापछुं भोगने के अने तेगने नियमित अने अविचंवाही भनावे के. गंतेच्यार-

* आ लेखनी चये अहंशः भगवता आनन्दपाणे ले जेग तरी गरेन आ देव भंत्राहिका संण्खगां अदु साउं अन्त्यायु गाडे छे. तंत्री.

२०१ वार्षिक जीवनी भक्तिनी वस्तु छिद्रेवतु' आन पेतानी तरह जे चवाने समर्थ थाय हो. गलीन तत्त्वो अने अशुद्ध वातावरणने दूर करवाने अने भक्तिनी आज्ञा परिस्थितिने शुद्ध वातावरणे भवेत्याचार साधनभृत थाय हो. आ सर्व आपतो देखने उच्चार करनारने वत्तीचे पञ्च मंत्रानी आष्ट्रा असर पञ्च छे अने ते अंतर्भी शोदृ निवेशन करवा हुं धर्माद्यु दुं.

आपबै जाणीचे भीचो के स्वरो ते भुजरीचो हो अने अमुक प्रकारना आकारो उत्पन्न करे हो. हरेक सर शद्रश्य निषिगां आकार उत्पन्न करे हो, अने तप्ता रवडेनो अगेग विनिध आकारो हपलने हो. सायन-सनां पुस्तकोमां वर्षवेला प्रयोगापरमी अष्ट्राय हो के अमुक प्रकारना वाळवथी उत्पन्न यता स्वरोयी चैकस प्रकारना भूमितिना आकारो जेवा आकारो रेतीमां थाय हो अने वणी फर्शीवांमां आव्यु हो के नियमित भुजरीचोने लीघे नियमित भूमितिना आकारो उत्पन्न थाय हो. गायन संभांधीना हिंदुत्रयो अष्ट्रावे हो के विनिध राग रागाणीचोना हरेकना आस आकारो होय हो, अने के आकारानु' आणेहुण वर्णन पुस्तकोमां आपवागां आवेद्यु हो. द्रष्टव्य तरीके भेष रागनो आकार लाली पर गेडेली लाल्य आकृति जेवो हो. वसन्त रागनो आकार उंचाची शशुगारेला एक युवान जेवो हो. आ उपरमी सद्ग मालुम पडे हो के अमुक राग अष्ट्रवा रागीली गोरेलर गावामां आवेदो ते द्वामां अथवा धूधरगां भुजरी उत्पन्न करे हो अने ते भुजरीने लीघे ते रागना लक्ष्यवाणो आकार देमां उत्पन्न थाय हो.

थेंडा समयपर लोट लीटननी ओरहीमां थेंडा क पस'ह करेला माषुसोनी सामेगीसीस वेट्स हुन्से प्रयोगो अद्वित एक बालाय आव्यु' हतु'. अने के शाश्रीय शोध उपर चश्च वर्ष सुमी प्रयोगो ठरीने आज्ञावय नांभवाने तेंधी समर्थ थाय होती. ते शेषने सिद्ध करवाने ते भाष्य आपवागां आव्यु' हतु'. गीसीस हुरस 'ओधुडेकृत' नामतु' ऐक साहु' वाळव वगाडे हो. अने ते वाळवने एक नवी तपा वणी शके तेवी भगव्य हो. तेवी तेंधीने गालुम पडे हो के वाळवमांधी नीक गता हरेक स्वरनी साचे ते वणी शके तेवी पमायु उपर राजेली रेतीमां द्वेष्कार थाय हो. शाष्युना प्रारब्धेज तेंधीचे ते धमव्य उपर आरीक रेतीना परमाणुमे. मुळगा होता अने तेवी वाळव वगाडतानी साचे उत्पन्न शती इवानी भुजरीयी अमुक भूमितिना आकार रुपे ते रेती जोडनार्ह गाई. ते वर्षते ने के लुहा लुहा आकारो थया तेनी नोंध लेनार अष्ट्रावे हो के तेजो ताराना, सर्पना, चहना, ने आंधने आनंद आणे तेना नवा नवा आकारो नजरे पडवा लुता. एक वर्षत नवारे गीसीस हुरस अमुक स्वर गाती होती ते वर्षते 'उधवी' नामतु' ऐक हूत ते रेतीना आकारमां

કેદ્ધાઈ અદ્રશ્ય થધ ગયું. રેણીએ કહું કે તે ફરીથી લાવવાને તેણે બોક આડવાડીયા સુા॥ ગાઈને મેળેનત કરી ત્યારે થયું અને હવે રેણી જાણી ગધ કે તે કુલ લાવવા અમુક રાગજ ગાવો જેધાએ. પ્રોત્સાહનો આનંદ વધતો ગચ્છો. ત્યાર પણી હરીયાઈ જનાવરોના દેખાનો રેતીપર દ્રષ્ટિગોચર થયા અને તેના પણી વૃક્ષ દેખાવા લાગ્યા. કેટલાંક વૃક્ષપરંશી ઝૂણ પડતાં હતાં, અને કેટલાંક વૃક્ષ ખરક વિપર આવેલાં દેખાતાં હતાં, તેમ કેટલાંક વૃક્ષની પાછળા દરિયાનો દેખાવ હતો. આ એમાં દેખાવ અરેણર જાપાનની સૃષ્ટિ સૌંદર્યતા નેવો હતો.

ઉપરના પ્રોત્સાહની નીચે જણ્ણાવેલી ભાણતો સિદ્ધ કરે છે. (૧) સરાં આકારને ઉત્પત્તા કરે છે. (૨). અમુક સ્વર અમુક આકારનેજ ઉત્પત્ત કરે છે. (૩) જે તમારે કોઈ ખાસ આકાર જેધતો હોય તે, અમુક તાલ પ્રગાહે અમુક સ્વરનોજ ઉત્પાદ કરેયા જેધાએ, (૪) અને તે કાર્યને વાસ્તે હીજે કોઈ પણ સ્વર અથવા ફોઈપણું તાલ સરળો સ્વર ઉત્પત્ત કરતાં હોય તો પણ ઉપરોગી થશે નહીં. આ વાત ગંનશાસ્કરને લગઢો અને ધર્મ થંઘોમાં આવેલી સૂચનાઓને ડેવી રીતે સિદ્ધ કરે છે તે તરફ નાજર કરો. આપણે એક મંત્રનું દ્રષ્ટાંત લઈએ ‘અમ્રિ ઇલ્લ પુરોહિતયુ’ તેસે જે તે ગંગાના શાખા આડ અવળા ગુડો; તો મંત્રની શક્તિ અદ્દૂધ થશે. બેટવા સારુ તમે મંત્રના શાખા આડ અવળા ગુડી શકો નહીં. જે તમે તેમ કરો તો પણી તે ગંગારફેશે નહીં. આ કારણને લીધેજ નાભિએ. માર્ગાંસા દર્શનમાં અને લૈનથર્માં આ ભાણતાને અતિશય અગત્યતા આપે છે. મંત્રમાં સ્વરથી ઉત્પત્ત થતી પ્રજરીએજ ખાસ અગત્યની છે. અને કે શાખા વાપરવામાં આવેલા હોય તેના અર્થ, અથવા અર્થનો અબાન કંઈ પણ ઉપરોગનો નથી, અને વસ્તુતા: છે પણ એમજ. કારણું ધણ્ણા એવા જગતોએ કે જેણો તદ્દન અર્થ વિનાના છે. આ વર્ગમાં તાંત્રિક હીજ મંત્ર અથવા આર્વી વેદના મંત્રવિજ્ઞાનમાં આવેલા ધાતુ વિનાના શાખાનોને સમાવેશ થાય છે.

જે આ વિચાર આપણે ધ્યાનમાં રાણીએ તો વેહમાં માલુમ પડતી નિચારના ન્યુનતા જેને લીધે પ્રોક્રેસર મેક્સિસ્યુલાર જેવા વેહનો બાલક ગન્યું જાતના અજાકા ઉત્પાદ રૂપ જાનવાને હોરાયા તે ભાણતા તદ્દન નકારી થધ જાય છે. મંત્રના સ્વર તથા વર્ણુ ઉપર અસલના લેણકો આટલો ધંમો બાર મુક્તતા તેણું ખાસ કારણું પણ હવે સમજાય છે. કારણું કે સ્વર અથવા વર્ણુમાં જે મંત્ર અશુદ્ધ હોય તો ધણીના ધારેલા કરતાં ફિકરી અસર કરે છે અને પરિણામ ખરાળ જાને છે.

અશુરને વાસ્તો સંસ્કૃત શાખા વર્ણ છે અને વર્ણનો અર્થ રંગ આગ છે. આનું કારણું શું કે તેણું કારણું એ છે કે અદ્રશ્ય સૃષ્ટિમાં હરેક શાખની સાથે રંગ ઉત્પત્ત થાય છે, તથા જુદા જુદા રંગના આકારો ઉત્પત્ત થાય છે. સમજા રંગોનું જેણીકરણ

જેમાં થાય છે તેને સ'સ્કૃતમાં સૂર્ય—રવિ—સા કહે છે તેનો અર્થ અવાજ થાય છે. ઉપર આપણે જેથું કે ગીતીમાં હુદાના પ્રયોગોમાં તેણીના સ્વરથી ઉત્પન્ન પતા આકારોમાં નાલુક પ્રકારના રંગો હતા. આપણે જેઈ ગયા છીએ કે આમુક આકાર ઉત્પન્ન કરવાને આમુક સ્વરનીઝ જરૂર છે અને જુદા સ્વરો જુદા આકારો ઉત્પન્ન કરે છે. મંત્રથાયામાં પણ આ વાત તદ્દન લૂટી જવામાં આવી નથી. કારણ કે જુદા લુદ્દા દેવતાઓની મહદ્દ માગતાણાં જુદા જુદા મંત્રો વપરાયેલા છે. વરુષની મહદ્દ જેઈતી હોય લારે જુદો મંત્ર, અને ગુફસ્પતિની મહદ્દ જેઈતી હોય લારે પણ જુદો મંત્ર બોલાય છે. જ્યારે મંત્રનો ઉત્ત્યાર થાય છે તારે શું બને છે તે જોઈએ. જે દેવની તરે શક્તિ કરવા હિંચતા હો તે દેવના મંત્રનું વારંવાર ઉત્ત્યારણ કરવાથી ઉત્થ લૂભિકા ઉપર અર્થોત્ત માનસિક લૂભિકા ઉપર દેવનો આકાર પાંધાય છે. અને તે દેવની પતિન અને શુશ્ર શક્તિઓ તમારી તરફ આકર્ષવાનું તે ડેન્દ્ર-મધ્યબિંડુ બને છે. અને તેટલા માટે મીમાંદુના પુસ્તકોણાં લગેલું છે કે મંત્રાત્મક દેવતા મંત્ર સિલાય દેન છેજ નાદી, તે વાત સિદ્ધ થાય છે. આનો અર્થ એ થાય છે કે આમુક દેવનો આમુક મંત્ર ણરોળર શુદ્ધ રીતે ઉત્ત્યારાય છે, લારે તે મંત્રથી ઉત્પન્ન થતી પ્રજ્ઞારીજો. ઉત્થ લૂભિકા ઉપર જોક આકાર ઉત્પન્ન કરે છે અને તે આકારનાં તે દેવ તેટણો વળત આવીને વરો છે, તથા શક્તિની મનોકાગના જરી કરે છે. આ ઉત્પરથી આપણને જખુયા છે કે સાયનસની હાલાની નવાગાં નવી શોધ પુરાતનકાળના આગણા પૂર્ણ પુરૂષોએ લગેલા સિદ્ધાંતની ચલ્યાં સિદ્ધ કરી આવે છે.

મંત્ર જાતની વાત હિંદુસ્તાનની જુદી જુદી ન્યાત અને જુદા જુદા ખમના લોકો ગોટા ભાતથી ગાને છે એટલુંજ નાદી પણ યુદ્ધાય, અમેરિકાની સુખરેખી પ્રાત ગણું દાદ તેને ધાર્યા માનણી કશુલ કરે છે. કોઈ પણ આકૃત વખતે મંત્ર લઘુનાર ગાંગે અતુધાન કરાવે છે અધ્યત્વા ચંત કરાણી માહાયીયામાં ધાર્યી પોતાને દ્યાયે અથવા ગણામાં ણાંયે છે, એટલુંજ નાદી પણ લઘુનાર લોકને વશ કરવા, રજના કોણનું નિવારણ કરવા, બાહ્યનાહાગાં કૃતવા, પેસાતાળાને વશ કરવા, ચાકરને વશ કરવા, શાનુને અનુકૂળ કરવા, હોધ સગાવવા, લોને વશ કરવા, શ્રીનું ચાલાય વધારવા, દૂર લોય તેને પારો આણવા, મિનને ચેળવવા, શાનુની વાચા તથા યુદ્ધિને આટકાવવા, નાચી જહું હોય તેને રેદી રાણવા, જી પુરૂષાં કલેશ ઉપાલવા કે સંપુર્ણ કરવા, શાનુનો નાશ કરવા, ખાંડક થવા, કે ખાંડક રક્ષા કરવા હિસ્તાદિ ખાંગતો ક્રિપર વાંચિક ગુણોગાં જુદા જુદા પ્રયોગો લગ્યા મંત્રો પ્રયોગ કરાવે છે. જેવી જેણી શક્તિ હોય તે પ્રમાણે જગ કરનારે ગાંધાં ગ્રાધાં આપે છે, તેઓ નાદી ધોધ અપ કરવા એરો છે. જે ખાંગતો જાપ કરવાનો હોય તેટલા દિવસ તેનો પ્રમાણિકપણે

૧૧૬

જન્મ ધર્મ પ્રકાશ.

આપ કરે તો જાપ કરાવનારને કાંઈક પણ લાભ થાય છે. એમાં બન્નેને એક ધીજા ઉપર ચોક્કસ શર્દા હેઠળ જોઈએ.

+ + + + +

મંત્ર શાખાની વાત તહન ગપગોળા તરીકે ગણુનાર નવા જમાનાના ચુવાન ખંડુઓને મંત્રશાખાની સત્યતા ઉપર આ લખાણ્યથી થોડું પણ અજવાળું પડવા સંભવ છે.

આ સંસારમાં આપણું ગમે તે પહીની હોય છતાં કોઈ પણ બાખતમાં ફ્રેદ અધ્યવા તો, સત્તા મેળવતાં પહેલાં અથવા તો ધીજાને ઉપયોગી નિવડતાં પહેલાં આપણું આપણા વિચારખળોને એકન કરવા માટે વ્યાકૃતાતા કાઢી નાંખવાની તથા શાન્ત મન રાખવાની ટેવ પાડવી જોઈયે. ધારો કે આપણું એક વ્યાપારી હોઈયે, અને વ્યાપારમાં કોઈ મોટી અને વિનાશકારક વિપત્તિ આવી પડવાનો કથ હોય, આવે વણતે જે આપણું ગમરાઈશું અથવા તો ચિન્તાભસ્ત રહીશું તો આપણું કાંઈ જ સુઅશે નહિ. અને આવી સિથિતિમાં રહેવું તે વિનાશકારક નિવડવાનું જ, કારણું જયાં ચિન્તા આપણા મનમાં પ્રવેશ કરે છે તેણે સાથે જ ખરા જોટાનો વિચાર કરવાની શક્તિ જતી રહે છે. મનને શાન્ત સિથિતોમાં આણુતાં વખતે ધણ્ણા ફોડા પણ થાય પણ આપણું અંત રાખવી જોઈયે અને આપણે આપણું ફ્રેદ મળશો. આવી સિથિતિમાં જે ઉપાય આપણું સુઅશો હોય તે તરત કામે લગાડી હોવો. અલખત પાછા વ્યાપાર બાખતના વિચારો કરતાં આપણું સુઝેલો ઉપાય ભૂલ ભરેલો લાગશે પણ તેણી આપણું દરકાર કરવી નહિ. આપણું ફ્રેદ ચિન્તારૂપી પડછાયાથી હોરાવાને બદલે શાન્તિરૂપી દૃતથી જ ફ્રેદ હોરાવું જઈયે. શાન્તિવાળો સમય રે દીસિનો સમય છે, ન તે જ સમયમાં આપણું ખરા ઉપાય સુઝે છે. આવા માનસિક શિક્ષણ્યથી વિખરાઈ ગયેલાં ખાંડાં વિચાર થળોં એકહાં થઈ જય છે, અને નિરીક્ષણ ફીપિકા (Seareblight) નાં કિરણોની ચેદ વિચાર્ય વિષય તરફ પ્રેરી શકાય છે, ન તેથી માર્ગ સુગમ થઈ પડે છે,

વસંત.

जैन उद्देश्यसमाज संघ



जैन मुनि अने आगेवानो विळळ शिवजी देवशारी माडिल डेफेमेशन केस.

अरण्णली नक्कल.

ता. २० भी सप्टेंबरे मुंबईना चोइ प्रेसाइंट्सी
भाण्डस्ट्री पासे केसनुं नीकण्ठुं.

धाने पक्षना आरिस्टरोना भाष्यानो सार.
केसनुं नीकण्ठी जव़ुं.

(सांजवर्तमान ता. २१ भी अने मुंबई समाचार ता. २१ भी उपरथी)

आचार्य श्री विजयनेगच्छरि तथा लालनगरवाणा वेरा अमरन्थांड
जसराज अने शा. कुंपरण आषुंद्दु विळळ
आपवामां आवेदी अरण्ण.

झांजहारी कॉर्ट केस. नं. अर. १७९ १६११.

श्रीपण्डि देवशी

कृतीयादी.

वी.

- १. महाराज नेमविजयल
- २. वेरा अमरन्थांड जसराज
- ३. शा. कुंपरण आषुंद्दु
- ४. साक्षी.
- ५. रतनन्थांड खीमथांड वीजेरे

जलाभासार.

गुंडो—उद्देश्यसमाज

सेक्षणानं. ५०० पीनलकोड.

१ हुं कच्छी जैन छुं, अने जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग, जैन योर्ही द्वाव
अने पालीताण्डुना वीरशासन आनंद समाजनो ओनररी सेक्टरी छुं. शे. जुहा
जुहा जैन आताच्छा उक्का क्रवामां अने स्थापनामां महां करी छे, जेवां के निशापार-
ने भाटे भक्तान, गरीणने भाटे निशाण, ओर्हनेज विग्रे. जैन काममां हुं
सारी रीते जाणीते थयेदो. अने भान पामेदो गृहस्थ छुं. जैन विद्या प्रसारक
वर्ग के जेनो हुं सेक्टरी छुं, तेहुं पोताना मुख्य उद्देश्यमानो ओक उद्देश जे जैन
धर्मनी चौपडीच्छा णाहार पाडी अने झेकावनी ते छे, तेने लाईने ते वर्गे जैन धर्म,
धर्मिणास, तेमनो प्रेत्रेत निग्रे बाणतमां धार्ढी चौपडीच्छा णाहार पाडी छे. हात
तुरत छपायेदी चौपडीच्छा मांथी ओक्तुं नाम “हींशाकुमारी प्रनास” छे के जेमां
जैन साधुच्छा (मुनिच्छा) भाटे जैन धर्ममां के प्रमाणे क्रमांयुं छे ते प्रमाणेनी
मुनिनी क्रन्ते अने वर्तन भाटे लघेत छे. आ चौपडी णाहार पाडवानो मुख्य उद्दे-

શ એ હતો કે જૈન સાધુ (મુનિ)ની ફરજો અને ઉપકાર વૃત્તિઓનું ગાણ્યાત્તર ગનુંયો જાણી શકે અને તે ભાગ્યતમાં પ્રસરેલ અરજાના દૂર થાય. એક જૈન સાધુ ને મનીજ્યલુ મહારાજ અને ખીજા એક જૈન ચાધુ આગામીદસાગળ મહારાજને એમ લાગ્યું કે આવી ચોપડી ખાડાર પટવાથી ડિન્ડુસ્તાનના કેટવાડ ભાગના જેનો ઉપર જે સત્તા તેઓ રચાવે છે તે કદમ્બ નાશ ન પાડે તો આપી તો શર્જ જીશે તેઓ તેઓ આ ચોપડી તરફ અને તે ચોપડી ખાડાર પાઉવામાં સાધનભૂત હોવાશી મારી તરફ પણ શનુભાવવાળા થયા અને વળત જતાં તેઓનો શનુભાવ મારી તરફ વધારે ધિક્કારવાળો થયો, તે એ સાધુ અને તેમના અનુયાયીઓ કે જેમાં જગણદાર નં. ૨ તથા નં. ૩ ઘણ્યા લાગણ્યીવાળા છે તેઓ મારી ઉપર તેઓનું વેરલેવાને લાગ રોધતા હતા.

૨ આ લાંબા વખતથી શોધાતો લાગ નીચેની રીતે તેમને મળ્યો. ધ. સ. ૧૬૧૦ ના ઓગસ્ટમાં મેં વીરશાસન આનંદ સમાજની એક મીરીંગ જાણીતા પંડીત લાલના પ્રમુખપણું નીચે પાદીતાણે ગેજવી. શનુંજ્ય દુંગર જેનોની ચાનાતું મુખ્ય સ્થાન છે અને તે પાદીતાણું નાણક આવેલ છે. જૈન સમાજના ધર્મા મેંબરો યાત્રા અને પૂજા માટે તે દુંગરે જયા દાતા. આ અવસરનો લાલ લાઇને નેમવિજ્યલુ મહારાજના ગિત્ર અને સદ્ગ્યાંક મુનિ ગોપનિયિયલુ ગદારાજ અને તેના અનુયાયીઓમાંથી કેટવાએકે એવો જોણો રીપોર્ટ ફેલાવ્યો કે કેટલાક જૈન પાસે તે દુંગર ઉપર એક દેરામાં પરમેશ્વર તરીકે મેં પૂજ કરાવી છે, અને તેથી એક ઘણું સાધ્ય ધર્મ વિરુદ્ધ ફૂલ ઉર્ફું છે. અને વળો સમાજમાં મેં બાપણો કર્યા તેની અંદર મેં એમ કણું કે ઘણ્યા જૈન સાધુઓએ મણ્ણું કેનોને પ્રક્રાર્યની ખાંધા લેવનાવી છે તેથી જેનોના વિસ્તારમાં ટોણો પડગ્યો નિ ગાને વળી તે લાય-છૂમાં મેં એમ કણું કે છેલા પાંચસો વર્ષમાં જૈન કેમામાં એવો એક પણ સાધુ થયો નથી કે જે જાણીતા નરશી મહેતા અને ગીરણાઈની ચરણામણીમાં આવી શકે. આ તદ્દન જોણું છે કે મેં પરમેશ્વર તરીકે મારી પૂજા કરાવી અને કદ્યના શક્તિની લાંબી હફમાં પણ વર્ષુન થઈ શકે એવું કેવું પણ દુલ્ય મેં કર્યું છોય.

૩ ઉક્ત નેમવિજ્યલુ મહારાજ આ વળતે ગોટાહ દાતા. જગણદારનં. ૨ અને નં ઉની સદ્ગ્યાંથી અમહાવાડ અને ખીજે સ્થળે તેના અનુયાયીઓને તેડાવનાના તેણું તાર કર્યા, અને મારી સામે કામ લેવાને માટે ધ. સ. ૧૬૧૦ ના ઓગસ્ટની બારની તારીખે આ માણુસોની એક મીરીંગ માળી.

૪ જ્યારે મેં આ પ્રમાણે વતું સાંશાળ્યું તારે દુંગર ગેયો અને ઉપર જણ્યાવેસા જગણદારો કે જે આ મીરીંગના મુખ્ય શરૂ કરણારા હતા તેમને જણ્યાંયું



કે હું કચ્છી જૈન હોવાથી અને તમે શુદ્ધરાતી અને કાઠીઆવાડી જૈન હોવાથી મારી ઉપર તમારો કોઈ પણ જાતનો કાયહેસર અધિકાર (ઝુરીસ્કીકરણ) નથી અથવા ચલાવી શકો તેમ પણ નથી. વળી ગે' તેમને જણ્ણાંયું' કે તમે મારી સામેના કહેવાતા શુણ્ણા માટે કાંઈ પણ પગવા લઈ શકો તેમ નથી અને તે ચાર્ખ પણ નકારા, તથાન જોટા અને પાયા પગરના છે.

૫ વળી ગે' કહું કે આ મીરીંગ માત્ર એક ગક્ષી માણુસોની અને નેમવિજયાલ મહારાજના અંધ શ્રદ્ધાળું અનુયાયીઓની ણનેદી છે અને મને બહનામ કરવાને અને મારી ચાલ ચલગત (કેરેકટર)ને ણણો લગાડવા માટેજ દ્વેષ ઝુદ્ધિથી એક ણણાંડુપે જોલાયેલી છે. તે મીરીંગની કાંઈ પણ નોટીસ મને આપવામાં આવી નહોંતી, તે મીરીંગ કાઠીઆવાડ અને શુદ્ધરાતના જૈનોની ણનેદી હુતી કે જ્યારેહું તો એક કચ્છી જૈન હતો. નેમવિજયાલ મહારાજ તે કહેવાતી મીરીંગના પ્રસુઅ હતા. અને બીજા એ જવાખારો પણ તાં હુાજર હતા અને તે મીરીંગનું કામ ચલાવવામાં અને હુદે પછી કહેવાશે તે ઠરાવો પસાર કરવામાં તેને મહદ કરતા હતા. દશ વાગે જે કે આમંત્રણ નહોંતું તો પણ હું તે મીરીંગમાં ગયો અને તેઓના અધિકાર માટે ગે' ચેલેજ કરી. તે કારણથી તે ગીરીંગ જે વાગ્ય ઉપર મુત્તતવી રાખવામાં આવી હો જે વખતે તે મીરીંગના બંધારણ અને મીરીંગના કાર્ય માટેની મારી તપાસ અને મારી ઉપરની તેમની સત્તાની મારી શોધ એવરફારીશી રહ કરવામાં આવી અને તે મીરીંગ મારે પરાળે છોડવી પડી.

૬ હું ધાર્દ છું કે તે મીરીંગનું કામ કુહરતી ન્યાયના મુખ્ય નિયમોથી તહેન વિરુદ્ધ રીતેજ ચલાવવામાં આંયું હતું અને ઉપર કહેવા ચાર્ખ માટે મને સંઘ બંધાર કરવાનો ઠરાવ પસાર કરવામાં આંયો હતો, જે પ્રમાણે બીજી બધી ન્યાતની મીરીંગમાં ચાલુ રીતાજ છે તે પ્રમાણે મારા બચાવમાં કહેવાનો મને કાંઈ વખત આપવામાં આંગેનો નહોંતો અને તે ગીરીંગનું કામ તહેન અનિયમિત, અવિયોગી અને શરમ ઉપલબ્ધ તેવુંજ માત્ર હતું. હું કહું છું કે નેમવિજય મહારાજને ફોઈ' પણ જાતનો ધાર્મિક અધિકાર મારી ઉપર નથી, કારણું કે જેનોની એક જાત તરંગચણના તે છે અને હું આચારા ગંભરનો ના.

૭ વળી તે ગીરીંગના એંગ ઠરાવ કરવામાં આંયો હતો. કે સંઘ બંધારનો આ ઠરાવ તારથી મુખ્ય, સુરત, આમદાવાદ, અને બીજા જોન સેન્ટરીઓમાં જણાવવો અને જ્યારે હેન્ડશીલના આકારમાં તે છાપાય લારે એક કાગળની સાથે તેને બંધાર ગોકલવો. હેન્ડશીલ અને તે સાથેનું લણાણ તે મીરીંગમાં તૈયાર કરવામાં આંયું, વંચાણું અને પસાર થણું.

૮ ધ. સ. ૧૬૧૦ ના એણાગસ્ટની તેરમી તારીખે સાંઘના નામથી એક તાર મુંબાઈ ભાયખાળે રતનચંહ એઠીમચંહ ઉપર જાને એક એણિલે તાર મુંબાઈ જવેરી ખજારમાં કલ્યાણચંહ સોલાગચંહ ઉપર કરવાગાં આવ્યા હતા. તે તારમાં એમ લખવામાં આવ્યું હતું કે “ સંધારી એક ગીર્ટીખે ભાવનગર, આમદાવાદ, અંસાત, વડોદરા, વઢવાશુ, લીંગડી, માંદાળ, બોડેરો મિંગેરેના શહેરથો સાડીત ગઈ કાલે લાલન અને શીવળુનો સાગાલ થયો છે. અને જાર્દિનુંગનો તે ણાનેની સાથેનો સંબંધ રાખવાનું એંધ કરવામાં આવ્યું.” કલ્યાણચંહ સોલાગચંહના ગળેલો તાર તેણે મુંબાઈના નગરશેઠ રતનચંહ એઠીમચંહ ઉપર મોકલાવી આપ્યો હતો. જ્યારે રણુ કરવાગાં આપણે ત્યારે તે તાર સંધારી લક્ષીકરિત રણુ કરવાની દું રજા ગાણું છું. હું કહું છું કે ઉપર જાણુવેલા જવાણદારોને તે તાર મુંબાઈ ફર્મા હતા.

૯ ત્યાર પણી તે ણાણત સંધારી એક ણાણુ ભી, રતનચંહ એઠીમચંહ અને એણિલુ ભાણુએ જવાણદાર મુનિ ને મલિકયણ મહારાજ અને જોટાદના સંધ વચ્ચે પત્ર વ્યવદ્ધાર ચાલ્યો હતો. જ્યારે રણુ કરવાગાં આપે ત્યારે તે પત્ર વ્યવદ્ધાર સંધારી લક્ષીકરિત રણુ કરવાની હું રજા ગાણું છું.

૧૦ જ્યારે મોકલથો ત્યારે તે ણાણકી ભરેલો અસં તાર મુંબાઈમાં તે તાર લેનારા કલાર્ક પાસે તેનું પ્રગટ થવું અને એણિલ લચ્છેના તારલાળા કલાકોની પાસે તેનું પ્રગટ થવું અને જેણી મારકૃત મુંબાઈગાં પસાર થતી વખતે ચાલુ વ્યવદ્ધારમાં તે ગચ્છે હોય, તે એમ ગને સાલાહ મળી છે તેમ ઘણી વધારે પડતી પણી. કેશન (જાહેરાત) છે કે જવાણદારગાં સાલસાઇની આગ્રી ણતાવે છે અનેનાં. ૪૬૬ ની કલ્યાણમાં અપવાદ રૂપે જે હડકો આપવામાં આવ્યા છે તેનો નાશ કરે છે.

૧૧ સફરહુ ડરાવ તે પ્રગાણુ ડેનણીલના આકારમાં છયાવવાગાં આવ્યો અને મુંબાઈ અને એણિલ જગ્યાનો મોટા ગ્રામાણીનેટલાળગારાં આવ્યો. આ ડરાવ મહુર પાડવાની રીતજ ઘણી તુકશાનકારક હણી અને તે અદનક્ષીવળી ડરાવ તે રીતે ઘણ્ણી વાંચનારાઓભાં ડેલાવવામાં આવ્યો. કાયહેશર જેટલા માણુસોભાં તે દ્રાવાવી શકાય તેના કરતાં આ અતી વિસ્તારમાં ડેલાતલાગાં આવ્યો.

૧૨ જોટાદનો ડરાવ જ્યાં જ્યાં જેનો રહેલા હતા તે શહેર અને જગ્યામાં બહુ અસરકારક થઈ શકે નાની. એણિલ ગામોભાં એંધારારક ગચ્છાવવા માટે તે જગ્યાના જેનોની ગીર્ટીખે તે ડરાવ પણાર કરવો જોઈએ.

૧૩ તે પ્રમાણે જવાણદાર નાં. ય જાં ના. ત તે કેંચ્યો ભાવનગરમાં જૈનનાં ચેરીટેખલ ફુડ અને ગેરી જે ડેલાગાઈ આબોદનના નાનારી જોણાણાય છે તેના વહીવટ કરનારા ત્રસ્તી છે અને જેણો તેને લીધે તે ભાવનગરની જેન સોસાયરી

ના કંગણ ના.

અથવા સંઘના નાયક છે તેઓએ શાવનગરમાં ગોટાફનો ઠરાવ અહૃદ્ય " હંસાંમાડે " ૧૬૧૦ ના સપ્ટેમ્બરની પાંચમી અથવા તે લગભગ તારીખે એક મીરીજિં એલાલાવી. મને જણ્ણાવવામાં આંધ્રાં છે કે બંનેજવાખદારોએ આ મીરીજના કાર્યમાં આગળ પડતો લાગ લીધો હતો. આ મીરીજની કાંઈપણ નોટીસ મને મોકલબામાં આવી નહોતી, અને હું ત્યાં હાજર થયો નહોતો. ગોટાફની મીરીજ પ્રમાણેજ આ ભાવનગરની મીરીજ પણ મુનિ નેમવિજય મહારાજના અનુયાયીઓનીજ હતી, જેઓ મને મારા ણાચાવમાં કાંઈ તથ આગવાને ધ્યાના નહોતા અને વખત આખ્યોજ નહ્યો. તે મીરીજ પણ કાઢીઆવાડી કેનોનીજ બનેલી હતી. ટુંકાષ્ટુમાં પાંચમાં અને છઢા પારામાં ગોટાફની મીરીજ વિરુદ્ધ કે વાંધા મેં ઉઠાયા છે તેજ વાંધા તેવીજ રીતે ભાવનગરની મીરીજ આગે લાગે હાં.

૧૪ હું કહું " છું કે ક્રેષ્ટી ઉશરેસાયેલા મુનિ નેમવિજયના અનુયાયીઓની જેમાં ઉપર કહેલા નં. ૨ અને નં. ૩ ના જવાખદારોનો સમાવેશ થાય છે, તેઓએ મારી પછવાડે મને સંધ ણહાર કરવાનો ગોટાફ ઠરાવ અહૃદ્ય કર્યો.

૧૫ પાંચમી સપ્ટેમ્બરે ડોસાલાઈ અલેયંદ્રના નામથી સુંબદ્ર પાથ્યેની કેન ડોન્કરનસો નામે એક તાર સુકવામાં આંધ્રો. તે એશ્રીસમાં તે તાર મજબો અને એલાલાવમાં આંધ્રો. અને સુંબદ્રના નગરશેડને મોકલી ટેવામાં આંધ્રો. તે તારમાં લખ્યું હતું કે, " લાલન શીવણુ સંધ બદ્ધાર એટાફ, સુરત, અમદાવાદના ઠરાવ કણુલ રખાયા. " જ્યારે રણુ કરવામાં આવે ત્યારે તે તારની હીકૃત પ્રગટ કરવાની હું રાજ માણું છું. તે તારગાં જણ્ણાવવામાં આવેલ શીવણુ તે હું પોતે જ છું.

૧૬ હું કહું " છું કે જવાખદારો નં. ૨ તથા નં. ૩ એં આ તાર સુંબદ્ર મોકલ્યો હતો. ત્યાં ડોસાલાઈ અલેયંદ્રના નામનો ડોઈ માણુસ જીવતો નથી. તે નામનો માણુસ ભાવનગરના કેન સંધને એક મોટી મીલકત આપીને મરી રહ્યો છે, જેણે તેઓના સંધના નામ તરીકે તેના નામને વદ્ધાયું કરીને આચળ કર્યું છે.

૧૭ ત્યાર પણી મી. રતનચંદ ખીમચંદ સુંબદ્રના નગરશેડ અને ડોસાલાઈ અલેયંદ્રના નામથી તે સંધની વચ્ચે તા. ૫ સપ્ટેમ્બરના તારને માટે પત્રચવહાર ચાલુ રહ્યો. તેણે લગેલા કાગળોના જવાખમાં મી. રતનચંદ ખીમચંદને એ કાગળ મણ્યા હતા, કે જે ણાનેમાં સંધના હુકગથી ડોસાલાઈ અલેયંદ્રના મુનીમ તરીકે ચોપટ શુલાણચંદ સાડી કરી હતી અને તેણી સાથે ડેટલાક ફસ્તાવેલોની કોપી હતી કે જેમાં ભાવનગરના અંધે તે ઠરાવ પણાર કરવાનું લગેલ હતું તે મોકલબામાં આબા હતા. જ્યારે રણુ કરવામાં આવશે ત્યારે આ પત્ર વધવહાર સંખાંધી કહેવાની હું

૨૪૩

જાન ગાળ પ્રકાશ.

રણ માણું છું. આ પ્રમાણે મોકલેલા કાગળોમાં એક કાગળ લાવનગર જવાણદાર વેરા અમરચંદ જસરાજને નામે કોઈએ લગેલાની ફોપી છે.

૧૮ (પારા હશ પ્રમાણે અક્ષરે અક્ષર છે.)

૧૯ મને જાણાવવામાં આયું છે કે એટાહતો ઠરાવ જૈન અને સાંજવર્તમાત શુજરાતી ચોપાનીયા કે જે સધળી જતના જૈન અને જૈનેતર (મુખ્યમાં વસતા) સર્વેમાં ફેલાયેલા છે, તેમાં તે ઠરાવ છપાયેલ છે.

૨૦ હું માનું છું કે, આ પ્રમાણેના સંહેશાચ્ચે મુખ્ય ધ્યાના ધીજા બાગમાં પણ ફેલાવવામાં આવ્યા છે, અને તારના ફેલાવાના કુદૃષ્ટી પરિણામ તરીકે તે ખફનક્ષીવાળી બાખત એવા ઘણું માણુસેના જાણવામાં આવી છે, કે જેને તે વાતમાં જરા પણ સ્વાર્થ ન હોય.

૨૧ મારા સોલીસિટર, મી. ફેટન અને વેદે મારી સૂચના પ્રમાણે સધળા જવાણદારો ઉપર નોટીસો મોકલાણી હતી, કે જે આ માર્કોથી આની સાથે જોડવામાં આવી છે, જેની અંદર ઉપર જાણું વેદી બાખતો વર્ણિયા પણી મેં તેમની પાસે સરત વિનાની મારી માર્કી માગવાનું જાણું વેદું છે અને વળી તેમાં મને સંઘ બહાર કર્યો તે અન્યાયી અને કાયહા વિરુદ્ધ છે તેમ જાણવવાનું સૂચયું છે. અને મારી આ માગણી સાથે મળતા થવામાં આનાકાની કરે તો કાયહેસર પગલા લેતાની ધમકી આપી છે. જવાણદારાએ આ નોટીસનો કંઈ પણ જવાખ આપ્યો નથી.

૨૨ હું માનું છું કે એટાહ અને બાવનગરના મીરીગનું મને સંઘ બહાર કરવાનું કૃત્યાનૂલમવાળું, અચોય, અવિવેકી અને અછાજતું હતું અને કુદરતી ન્યાય અને પ્રમાણિક વર્તનના સધળા નિયમથી ઉલદું હતું. હું માનું છું કે તે મીરીગેની મને નોટીસ આપવી જોઈતી હતી અને મારા બચાવમાં સાંલેળું જોઈતું હતું. હું કહું છું કે તે જવાણદારો મારી સામે દ્રેષ્ટિ ઉશ્કેરાયેલા હતા અને મને સંઘ બહાર કરવાનો ઠરાવ મારી આણકું અને ચાલાયતગતને ધક્કો લગાડવાના ધરાદાથીજ કરવામાં આવ્યો. હુતો અને મને સલાહ મળી છે કે તે ઠરાવ બહાર પાડવામાં નાં છદ્દ મી કલમમાં જાણું વેલા કોઈ પણ અપવાહનો જવાણદારો હક ધરાવતા નથી.

૨૩ જવાણદારોના આ એટા કામના પરિણામે મારે મારા શરીર, મન, કીર્તિ, અને પેસાની બાખતમાં ઘણું સહન કરું પડશું છે.

૨૪ આ રિથતિને લીધે હું મુખ્યમાં ૧૬૧૦ ના એગાધની ૧૩ મી તારિખે અથવા તે લગભગ નં. ૮-૧૦-૧૧ પારિથાદમાં વર્ણિયા પ્રમાણે એટાદાના ઠરાવને ગંગે સધળા જવાણદારોને મારી ખફનક્ષી કરવાને માટે અને નં. ૨ અને ૩ જવાણદારોને

ઈ. સ. ૧૯૧૦ ની પાંચમી સાફ્ટેબ્લારે નં. ૧૫, ૧૬, ૧૭, ૧૮ પારિઆફ્માં વર્ષુંથા પ્રમાણે ભાવનગરના ઠરાવને અંગે મારી બદનક્ષી કરવાને માટે હું તેમને માથે ચાર્જ મૂડું છું અને વિનાંતિ કરું છું કે તેમની વિરુદ્ધ પ્રેસેસ આપવામાં આવશે અને કાયદા પ્રમાણે તેમાની સામે કામ ચલાવવામાં આવશે. એટાદના ઠરાવતું ઉપર પણીકેશન સી ડિવિઅનમાં બ્રેરી બનારસમાં અને લાવનગરના ઠરાવતું પાયથીણી ઉપર પણીકેશન થયું છે. નં. ૧ ના જવાખાર હાલ અમહાવાહ રહે છે અને નં. ૨ અને નં. ૩ ભાવનગર રહે છે.

મુંખધ્યમાં સોગન પૂર્વક કલ્યાણ
કરવામાં આવી. આજે તા. ૩૧
આગષ્ટ. ૧૯૧૧ }
}

શીખલુ દેવશી
મારી પાંચ
(સર્દી) શ્રી. શ્રીમ.
ઓસ. ઓસ્યન.
નાની પ્રેસીડનરી માણસદે.

ઉપર જણાવેલી અરણુમાં જવાખારારો સામે સમન્સ માગ્યા છતાં કોર્ટ જમન્સ ન આપતાં તા. ૨૦ મી સાફ્ટેબ્લારે તે ચંબંધી જવાબ આપવાની નોટીઝ કાઢી હતી.

જવાખારારો પૈકી મહારાજશ્રી નેમિવિજયલુ ચોમાસા વિગેરેના કારણુથી હાજર થઈ શક્યા નહેતા અને એના બે જવાખારારો નોટીઝ નહીં મળ્યા છતાં કોર્ટ. ના હુકમને માન આપીને જાતે હાજર થયા હતા.

તા. ૨૦ મીની અપોરે સાડાખારવાગે કોટની પોલીસ કોર્ટમાં બડા પ્રેચીડનસી મિલુસ્ટ્રેટ મી. એસ્ટન સન્મુખ તપાસ શરૂ થઈ હતી, ઇન્દ્રિયાદિ તરફથી મી. વેલીનકર એરીસ્ટર હાજર થયા હતા, અને પહેલા જવાખાર તરફથી મી. ગુંલાખચંહ સોલીસીટરની ફરમાશથી મી. બુલાભાઈ એરીસ્ટર અને એના અને ત્રીજા જવાખારારો તરફથી મી. મોતીચંહ સોલીસીટર અને મી. બાલુભાઈ દેશાઈ ઘ્યીડરની ફરમાશથી મી. તાલીયારખાન એરીસ્ટર હાજર થયા હતા.

જેનોથી કોર્ટ ચીકાર કરાઈ ગઈ હતી.

મી. બુલાભાઈ દેશાઈના ભાષણુનો દુંક સારુ.

પહેલા જવાખાર તરફથી નોટીઝના જવાખારમાં મી. દેશાઈએ ભાષણુ કરતાં જણાયું હૈ—ફરિયાહનામામાં ને વિગતો જણાવવામાં આતી છે તે ઉપરથી બદનભીને ગુંઠો થયેલો જણુતો નથી. એવું ધારીએ કે આ ગુંઠો બદનક્ષીનો છે તો પણ ફરીયાદીને જે છાલ થવી જેઠાએ તે એટલી તો નાની છે કે તે કારણને લીધે આ કોર્ટ આ સુફર્ફરો હાખલ કરે નહીં. વળી ફરીયાહનામામાં જણાવવામાં આયું નથી કે આ સુફર્ફરોના કોઈ પણ આરોપીને મજકુર બદનક્ષી પ્રગત કરવા જાયે

લાગતું વળગતું હતું. જૈન કોંગ એ બુદ્ધી બુદ્ધી ન્યાતોણી ણનેલી એક મોટી કોમાં છે પરંતુ તેની અંદર તે તે આખી ન્યાતો સમાઈ જતી નથી. તેનો અમુક અમુક લાગ સમાય છે. દ્વારીયાહી તરફથી એવો હાનો કરવાગાં આવ્યો નથી કે દ્વારીયાહી ને ન્યાતના છે એજ ન્યાતમાં પોતે છે. ગઢેલા જવાણહાર એક ધર્મ ઉપહેશક છે; તેથી તે ડેઝ પણ ન્યાતને લાગતા વળગતા નથી. આ એક માન ધર્મ સંંખ્યી ગતિસેહનો સવાલ છે, નહીં કે ન્યાત બદ્ધાર કાઢવાનો છે. દ્વારીયાહી કચ્છી જૈન છે ત્યારે ખીન હોજવાણદારો કાઠીયાવાહી જૈનો છે. એંગો દ્વારીયાહીને ન્યાત બદ્ધાર મેલી શકે નહીં. દ્વારીયાહીના ધર્મ સંંખ્યી વિચાર નહીં ગસંદ પડવાથી જોણાટાહ વિગેરના જૈન સંઘ તેને સંઘ બદ્ધાર મેદયો છે. જેણી કશું આસ નુકશાન દ્વારીયાહીને થયું નથી. આવા સંખેણો વચ્ચે દ્વારીયાહીની દ્વારીયાહ કાઠી નાપણી જોઈએ.

શ્રી. તાલીયારભાનતું ભાષણ.

ખીન ને ખીન જવાણહાર તરફથી રી. તાલીયારભાનને ભાષણ કરતાં રી. દેશાઈ હેરીસ્ટરના હોલવાને એકો આગતાં જણાયું કે મારા અગ્રીલો લાવનગરની જૈન કોમના આગેવાન ગૃહસ્થો છે. દ્વારીયાહી ખતાવી શક્યો નથી કે વાંધાવાણો તાર મોકલવામાં તેમસો કાંઈ પણ સંખાંધ હતો. આ એક ખીલદુલ અપ્રમાણિક દ્વારીયાહ છે અને તે એક એવા માણસે કરી છે કે જેણે ખુદ પોતાના ણતાવના પ્રમાણે આ કોમાં એક નવા તીર્થકર તરીકે પોતાને ખાંચવાની તજવીજ દીમી હતી; પરંતુ જૈનના આગેવાનોએ જોયું કે તે એક એવો માણસ હતો તેવી તેવો એક સસા હોલવાવી ઠરાવ દીયો કે આ રાણ્યું સાથે ધર્મ સંખાંધી કશો સંખાંધ રાણવો નહીં. એ ઠરાવ પસાર થાગાને આજે લગતાગ તેર ગાસ થતા આના છે. આજે એટલી લાંણી સુહત પણી દ્વારીયાહી કહેવાને બદ્ધાર પડણો છે કે ગાજુરુ ઠરાવથી તેની આણઢુને ધોકો પહોંચ્યો છે. તે જણાવે છે કે તેણે ચાંદુણોની નિર્દૂસ એક મુસ્તક બહુાર પાડવાથી તેની સામે આ યુદ્ધ અન્યાવનાગાં આપણું હતું. પણ જે વાતાગાં કેટલી વજુદ છે તે એટલી જ ખીના ઉપકથી જણ્યાયો કે તે મુસ્તક પ્રગત થાગાને છ વર્ષ શર્ફ ગયા છે, અને હોણાટ ખાતોની સલા તો માત્ર એક વર્ષ હિયર જ હોલવનવામાં આવી છે. વળી કાયડા ગ્રમાણે બદ્ધનક્ષી કાયરે થબોલી કહેવાય કે જ્યારે દ્વારીયાહીની સક્ષને તેની ન્યાત અથવા તેના ખાંધાને લગતા રાંડાગમાંની બદ્ધાર કાઢવામાં આવેલો હોય. આ સુકરદમામાં તો તેને રાંધની બદ્ધાર કાઢવાગાં આવ્યો છે. આ એક અગત્યની ખીન છે કે જે દ્વારીયાહીએ પોતાના દ્વારીયાહનામાગાં છુપાવી રાખી હતી. સંઘના ઠરાવને ન્યાતની સાથે કાંઈ પણ સંખાંધ નથી. વળી દ્વારીયાહી કહે છે કે તે કચ્છી જૈન છે જ્યારે જવાણહારો લાવનગરના કાઠીયાવાહી જૈનો છે. અને હોણાટાં મળેલ સલા ગુજ-

कंत उद्देशन के.

१२५

राती अने काठीयावाडी केनेणी हुती. वणी इरीयाहनामा उपरंथी मालुम पडतुं नथी के तार कोणु चोकव्यो हुतो. तेमज ज्वाणहाराने ते तार साथे शुं संणधं हुतो ते पण्यु खुली रीते ज्वाववामां आ०युं नथी.

मालुस्ट्रेट—त्यारे आ ठशावथी इरीयाहीना संणधमां परिष्वाम शुं आ०युं छे ?

भी. तालीयारभान—ऐटलुंज के संधे तेना धर्म संणधी विचारे तरइ नापसंहगी भतावी छे.

मालुस्ट्रेट—लग्न तथा ज्मणुना सवालना संणधमां इरीयाहीने कांध तुक्शान पडेंयुं छे ?

भी. तालीयारभान—यीलकुल नहीं. अगे इक्कत तेना धार्मिक विचारे। पसंद करता नथी. ए पोतानी न्यातना लग्न तथा ज्मणुमां भाग लई राकयो, तेमज ते हेरे पण्यु अर्ध शक्यो. पण्यु संधमां हाखल थध शक्यो नहीं.

इरीयाहीनी इर्याह यीलकुल घ्याली छे. ते इर्याह करे छे के तार ओदीसना मालुसोओ तार वांचयो हुतो. पण्यु खुह तेणु आ भाखतना संणधमां हेंडगीलो. अने योपानीआ हजारोनी संण्यामां ईलाव्या छे अने तेमां भजकुर ठराव तेणु प्रगट अर्यो छे. पोताना इरीयाहनामामां इर्याह इर्याह करे छे के तेनी विढ़द ज्वाणहारना हुमायतीओ एवो बुमाटो ईलाव्या हुतो. के केटलाक जैनोओ तेनी हेवता माइक पूल शीधी हुती पण्यु हुं आ छबोओ. रजु ५३० छुं के जे उपरथी आप नामदारने ज्वारो के तेणु पोताने एक महात्मा तरीके अपाववा माटे बुही बुही रीते ऐसीने ते छणीओ. पडावी छे. बदके तेणु पोताने एक पच्यीशमा तीर्थंकर तरीके एणाभाववानी पण्यु तजवीज करी छे के जे मालुस आपनी सामे गीगा केंद्रा साथे अडो छे. तार मास्तरो भाव शीवलु हेवशीना नामथी आ शीवलुने ओणामी शके तेहुं यीलकुल कारणु नथी; कारणुके हुनीआमां शीवलु नामना मालुमो संण्यापंध छे. वणी जे इरीयाहीनी आणद्वने लानी गणेची दती तो तेनी इर्याह तेणु ओटाह के लावनगरमां शामाटे न करी ? भाव भाव अचीसीने हेरान करवा माटेज तेणु सुंभधमां इर्याह करी छे. वणी तेणु पोताने संधमां वेवा माटे आज सुधी हरेक क्लाशीश शीधी हुती परंतु ते भर्वे रह गई त्यारे कौटुमां ज्वानुं दणाणु करी ते पोतानी उपली नेममां क्लाववा भागतो हुतो. पण्यु क्लाव्यो नथी. आ सधाना संज्ञेगो ध्यानमां लाई तमो नामदार इरीयाहीनी इरीयाह रह करशो.

इरीयाहीने कौटै पूछेला सवाल.

भी. तालीयारभानतुं भाषणु पुरूष थया भाद कौटै इर्याहीने नीचेना ज्वालो पुछ्यां हुतां

૨૨૬

જેણ ધર્મ પ્રકાશ.

માણુસટ્રેट.—તમને ન્યાત ખાદ્યાર મેલવામાં આવ્યા છે કે ?

શ્રીવળુ— મને ન્યાત ખાદ્યાર નહીં પણ સંઘબહાર મેલવામાં આવ્યો છે. આ હીના ન્યાત ખાદ્યાર મેલવા કરતાં, પણ અરાણાએ કારણું મને સંઘ ખાદ્યાર મેલવામાં આવેલ હેવાથી મારું લગેલું ડોઈ વાંચતા નથી, હું જે બોલું છું તે ડોઈ સાંભળતા નથી, મારાં પુસ્તકો અપતાં નથી. હું એક નેતેન વકતા છું અને ઉગરના બનાતથી મારા શાપળો પણ હુંએ ડોઈ સાંભળશે નહીં. મને ઇસકું લાગ્યું છે અને જેનોની નજરમાં હું હુલકો પડ્યો છું.

માણુસટ્રેટ—એક એક વરસ પણી તમે કોર્ટમાં કેમ આવ્યા ?

શ્રીવળુ— ન્યારે મને સંઘ ખાદ્યાર મેલવાનો હરાવ થયો. હતો લારે હું હોટાહ ગયો હતો ને લાંના આગેવાનોને મળ્યો હતો. તેઓએ મને કશી અણર આપી નહોલ્લી, ને મારો ખુલાસો સાંભળતાની પણ ના પાડી હતી. તે પણી કેટલીક સુહત રહી હું લાવનગર ગયો અને લાં જઈ મેં લાંના અને જુદા જુદા જાગના આગેવાન જૈનો ઉપર તાર કર્યા અને લેણો લગ્યા જેમાં કેટલીક વણત વહી ગયો. છેવટે જો તેઓને ચેતવણી આપી કે મારો ખુલાસો પૂછચ્યા વગર જે ઝંઈ પગલું તમે લારણો તેના જોણમહાર તમે રહેશો. પહેલા જવાણદાર વડા જેન ધર્મશરૂ છે, તેને હું કોર્ટમાં ધસડવા માણતો નહોલ્લો અને ધર્મશરૂ હતો કે તેઓ ઘરતે વણતે શાંત પડ્યો પણ એવું કશું જાન્યું નહીં અને તે પણી અમહાવાહ આતે કેટલાક હુંડણીલ બોડી સુહત અગાઉ ખાદ્યાર પડ્યા, જેમાં મારી ને લાલન ગાંધીની વધુ ચર્ચા દેલાવવામાં આવી હતી. આ ચર્ચા ગામેગામ દેલાઈ ગઈ અને મને ધાર્મિક ગાદુંલાગ્યું એટલે જો કોર્ટમાં જવા શિવાય હીને રસ્તો જાયો નહીં તેથી મેં ગારી ફરીયાદકરી છે.

માણુસટ્રેટ—તમને ધીજું શું નુકશાન થયું છે ?

શ્રીવળુ— આશી ગાંધી ચિંતામાં દ્વિસો સુધી રહેલું પડ્યાં છે ને મારા શરીર ઉપર તેની અસર થઈ છે. આ ઉપરાંત કેટલાક સાખાવતી આતાં જે હું ચાલુંછું તે પણ બધ્યમાં આવી પડ્યાં છે.

મીર વેલીનકરનું લાખાણ.

કૃતીયાતીના ખારીસ્ટર મીર વેલીનકરે લાખાણ કરતાં જાળ્યાંયું કે—કૃતીયાતીનું યુદ્ધી રિસે લાઈભલ થયું છે. ધાર્થા ચોપાનીયા જવાણદારોની મહદ્ધથી વહેંચાયા છે. જે મારે અરો જુથાની રણુ કરી શકીએ તેમ છીએ. ન્યાતખાદ્યાર કરતાં સંઘ ખાદ્યાર મેલવાનું ડાગ વધુ અરાણ છે તેથી કૃતીયાતીને ધાળું નુકશાન પહેલાંચ્યું છે. તેથી મારા અશીલને કેટલું અફુન કરવું પડ્યો તે તેમજ તાર વિગેરે મુંણઈમાં